चन्द्रमासिंह उर्फ चमकू

लू शुन की विश्वविख्यात कथा रचना 'आ क्यू की सच्ची कहानी' से प्रेरित

—

प्रदर्शन-आलेख

भानु भारती



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु 25 00

भानु भारती

प्रथम संस्करण 1985

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली 110002

मुद्रक रुचिका प्रिण्टर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण चंचल

CHANDRMASINGH URF CHAMKU
Performing Text of Lu Xun s Story
The True Story of Ah Q *by* Bhanu Bharati

सर्वेश्वरजी के प्रति

लू शुन

'लू शुन' को प्राय 'चीन का गोर्की' कहा जाता है। भारतीय सन्दर्भ म सामान्यत उनकी तुलना मुशी प्रेमचन्द और शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय स की जाती है। इसका कारण केवल यही नही है कि ये लखक समकालीन थे बल्कि यह है कि इन लखको ने अपने लेखन म सामाजिक विसगतियो का वसा ही भण्डाफोड किया था जैसा कि लू शुन ने।

चीनी गणराज्य के महान नता माओ त्से तुग ने लू शुन की महत्ता को रेखाकित करते हुए कहा था कि वह 'अत्यन्त साहसी और बेहद अचूक दृढ और निष्ठावान, असाधारण ओजस्वी राष्ट्रनायक या जिसका उदाहरण इतिहास म भी विरल है।" 1930 मे शघाई म जब वामप थी चीनी लेखको का ऐतिहासिक सगठन 'चाइना लीग ऑफ लफ्ट विग राइटस प्रकाश मे आया तो लू शुन न केवल उसके सस्थापको मे से एक थे बल्कि 1936 तक उसके प्रमुख भी रहे।

लू शुन की कहानियो के सभी चर्चित पात्र वगविषम समाज के उत्पीडित चरित्र है फिर चाहे वह पागल आदमी हो रुतु हो या आ क्यू। आ क्यू की सच्ची कहानी पढने के बाद हरेक को यही लगेगा कि—हम सब आ क्यू ही हैं। लू शुन ने बडी बरहमी स उन जनविरोधी ताकतो का उधेडा और उन पर हमला बोला जिन्होने जनता का कुचल दिया था। लेकिन इसके साथ ही लागो की आकाक्षाओ, अपेक्षाओ और उनकी सजनात्मक ऊर्जा को भी पूरी आत्मीयता स चित्रित किया। 'समाज को बदल डालना ही एकमात्र रास्ता है'—लू शुन की रचनाओ का यही मूल सन्देश है।

अपनी बात

नाटककार और निर्देशक के बीच के सम्बन्धों को लेकर बहुत बहस मुबाहसा हुआ है। अक्सर गोष्ठियों और सेमिनारों में उन्हें एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया जाता है। हिन्दी के लेखक अक्सर निर्देशकों के अहम् की शिकायत करते हैं कि वह उनकी कृति के साथ मनमानी छूट लेते हैं। और यह भी, कि वह नाटककार को दोयम दर्जे की चीज समझते हैं। कुछ लेखकों ने तो निर्देशकों के अनपढ़ होने की बात भी की है। उनके मतानुसार हिन्दी में नाटकों की कमी नहीं है, कमी है निर्देशकों में साहित्यिक अभिरुचि और समझ की। इसके प्रमाणस्वरूप अक्सर जयशंकर प्रसाद के नाटकों का उदाहरण दिया जाता है। दूसरी ओर निर्देशकों को लेखकों से ढेरों शिकायतें हैं कि वे रंगमंच की आवश्यकताओं को नहीं समझते। उनमें नाटकीय स्थितियों की पकड़ नहीं है—आदि-आदि। इधर एक नया सिलसिला नाट्य रचना शिविरों (प्ले राईट वर्कशाप) का भी चल निकला है—जहाँ कुछ अधकचरे किस्म के 'तकनीकी' लोग मिलकर लेखकों को रंगमंचीय तकनीक की 'बारीकियाँ' सिखाने की कोशिश करते हैं। यह सब चल रहा है। और, अभी थोड़े समय से नहीं, पिछले काफी लम्बे समय से। लेकिन कोई नतीजा सामने नहीं आया। कई नये लोगों ने इस बीच नाटक लिखे और छपवाये भी। कई प्रतिष्ठित लेखकों ने 'तकनीकी' लोगों के साथ मिलकर भी प्रयास किये। किन्तु पिछले दस सालों में एक भी महत्त्वपूर्ण नाटक सामने नहीं आया। और केवल हिन्दी ही नहीं, दूसरी भारतीय भाषाओं में भी लगभग यही स्थिति है। लेकिन अगर आप विदेशी भाषाओं में देखें तो पायेंगे कि वहाँ भी इस बीच कोई इब्सन, बर्नार्ड शॉ, आर्थर मिलर या बैकेट पैदा नहीं हुआ है। इसके कई कारण हो सकते हैं, और शायद हैं भी। लेकिन एक तथ्य की ओर मैं इंगित करना चाहता हूँ।

पिछले दो-तीन दशकों में रंगमंच के मूल स्वरूप में ही एक बड़ा परिवर्तन आया है। उसकी भाषा सिनेमा और इलैक्ट्रानिक संचार माध्यमों के सम्पर्क में बहुत बदली है। वैसे भी, सम्प्रेषण के नये नये साधनों और बदलाव की तीव्रतर होती जा रही गति ने सम्प्रेषण को जटिल से जटिलतर बना दिया है—और रंगमंच के सामने उसके अस्तित्व को लेकर ही प्रश्नचिह्न खड़े हो गये हैं। इस तरह का खतरा रंगमंच के सामने इतिहास में कभी पैदा नहीं हुआ था। राजनैतिक विरोध और दमन का शिकार रंगमंच अवश्य होता रहा, लेकिन उससे उसकी ताकत कम नहीं हुई, बढ़ी अवश्य। वह धार्मिक अनुष्ठानों से आरम्भ करके एक शक्तिशाली कला माध्यम के

रूप मे निरंतर विकास पाता रहा—और एक वक्त वह आया जब सम्प्रेषणात्मकता एवम कलात्मक प्रामाणिकता मे रगमच अन्य सभी कला-माध्यमो को पीछे छोड गया। कहना न होगा कि ऐसा इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि रगमच, बिना अपनी पहचान खोये, दूसरे कला माध्यमो के श्रेष्ठ अनुभवो को भी समय-समय पर अपने मे समाहित करता रहा। साहित्य, सगीत, चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला तथा नृत्य—कोई ऐसा माध्यम नही था जिससे रगमच का जीवन्त सम्पर्क न हो—और जिसे रगमच ने अपने स्पर्श से और सजीव न कर दिया हो। अब सिनेमा, टेलिविजन, फोटो जर्नलिज्म आदि ने रगमच के सामने नयी चुनौतियाँ खडी की है—और जैसा कि मैंने कहा है रगमच को नये सिरे से अपनी पहचान करनी पड रही है। अगर उसे अपना अस्तित्व बनाये रखना है तो तमाम तकनीकी माध्यमो के अनुभवो और आज के युग की सम्प्रेषणात्मक जटिलताओ से उसे जूझना होगा। इस संघर्ष मे उसका पूर्व स्वरूप बदलेगा—और बदल रहा है। यह बात आज रगमच से जुडे हर रचना कर्मी को न सिर्फ समझनी है—बल्कि स्वीकार भी करनी है। तभी वह इन बदली हुई परिस्थितियो मे कुछ सार्थक कर सकने की स्थिति मे होगा।

आज, उपर्युक्त सन्दर्भो मे यह आवश्यक हो गया है कि हम नाटककार, निर्देशक और अभिनेता की भूमिकाओ की पुनर्व्याख्या करें। मेरे खयाल मे अग्रेजी आलोचना के माध्यम से नाटककार और निर्देशक की जो पारम्परिक परिभाषा हमे मिलती है वह नाकाफी और भ्रामक है। और शायद यही कारण है कि आज हिन्दी मे नाटककार और निर्देशक एक-दूसरे के बरक्स खडे हैं साथ नही। यह सर्वविदित तथ्य है कि हमारे पारम्परिक (संस्कृत) रगमच मे नाटको की रचना अभिनेताओ को केन्द्र मे रखकर की जाती थी। नाटको को पढते हुए स्पष्ट होता है कि अभिनेता की कला को पूरी गुंजाइश और उसकी सृजनात्मकता को पूरी स्वतन्त्रता देने के लिए नाटककार सतत सजग रहा है। यही कारण है कि कुछ रग-समीक्षको को आज यह *नाटक केवल 'ढाचा' भर लगते हैं—जिसके सहारे अभिनेता अपनी मर्जी* से इम्प्रोवाईज करता था। मतलब कि अभिनेता को नाटककार द्वारा प्रदत्त कलात्मक स्वतन्त्रता आज हमे खामी लगने लगी है। यह मानसिकता हमे पश्चिम से मिली है—जहा नाटककार का रगमच पर पूर्ण वर्चस्व हो गया था। पारम्परिक पश्चिमी रगमच के केन्द्र मे भी था तो अभिनेता ही, लेकिन वहाँ एक फर्क था। हमारे यहाँ जबकि नाटक दृश्य-काव्य था और अभिनेता के शरीर (हाव भाव, अग सचालन वेश भूषा आदि) पर पूरा बल था—वही पश्चिम मे नाटक काव्य अधिक था और *अभिनेता के सम्भाषण पर जोर था। वहाँ रगमच श्रोताओ के लिए था*—दर्शको के लिए उतना नही। अत वहाँ शब्द प्रमुख होता चला गया, और उसकी तर्कसंगत परिणति एक ऐसे रगमच के विकास मे हुई जिसके केन्द्र मे नाटककार था, अभिनेता नही। लेकिन यह स्थिति स्वाभाविक नही थी—क्योकि रगमच मे सम्प्रेषण अन्तत दृश्यात्मक है और अभिनेता के माध्यम से ही सम्भव है। इस अस्वाभाविक स्थिति ने एक नये रचना-व्यक्तित्व को रगमच मे जन्म दिया जिसे निर्देशक कहते हैं। कुछ लोग संस्कृत रगमच के सूत्रधार से निर्देशक को कन्फ्यूज करते हैं, लेकिन

यह गलत है। दरअसल निर्देशक पश्चिमी रंग यात्रा की उपज है जो कि आरम्भ में रंगमंच में नाटककार और अभिनेता के बीच मध्यस्थ के रूप में प्रकट हुआ। उसका काम ही यह था कि वह अभिनेता के हाथों नाटककार के (कलात्मक) स्वार्थों की रक्षा करे। और आज भी नाटककार निर्देशकों से सिर्फ इतना ही चाहते हैं। लेकिन कोई भी सजग और सृजनशील व्यक्ति केवल बिचौलिया होकर नहीं रह सकता। वह अपने लिए एक ठोस और बुनियादी भूमिका चाहता है। अत शीघ्र ही निर्देशक ने अपनी सार्थकता की खोज में रंगमंच के स्वरूप की पड़ताल आरम्भ कर दी—और रंगमंच के सामने कई नये, लेकिन बुनियादी किस्म के सवालात खड़े कर दिये। रंगमंच की सबसे नयी और जवान इकाई होने के नाते, निर्देशक में असीम ऊर्जा थी और नयी चुनौतियों से जूझने की जबरदस्त इच्छा शक्ति भी।

इधर सिनेमा ने एक ओर निर्देशक की भूमिका का अधिक विस्तार किया और पुनर्व्याख्यायित किया तो दूसरी ओर रंगमंच में उसकी उपस्थिति और उपयुक्तता को लेकर प्रश्नचिह्न भी खड़े कर दिये। कई प्रमुख रंग निर्देशकों को लगा भी कि उनका वास्तविक माध्यम सिनेमा है - जो कि रंगमंच का ही विकसित रूप है—और वह रंगमंच को छोड़ गये। लेकिन शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि सिनेमा और रंगमंच कई समानताएँ होने के बावजूद बुनियादी रूप से बिल्कुल भिन्न माध्यम हैं, जो कि परस्पर एक दूसरे को प्रभावित तो करते हैं लेकिन परस्पर पूरक नहीं हो सकते। और यह भी कि बदली हुई स्थितियों में रंगमंच निर्देशक के बिना बहुत दूर नहीं चल सकता। अगर नये माध्यमों की चुनौतियों का सामना करना है तो उसे अपने केन्द्र में निर्देशक को जगह देनी होगी। आज जो दुनिया भर में रंगमंच निर्देशकों के नाम से जाना जाता है यह कोई इत्तिफाक नहीं है—यह एक बुनियादी जरूरत है जिसे बदली हुई सामयिक स्थितियों ने पैदा किया है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि अभिनेता और नाटककार की अब कोई भूमिका नहीं रही या कि गौण हो गयी है—लेकिन उनका निर्देशक के तहत काम करना आज जरूरी हो गया है। लगातार और तेज़ी से बदलते सन्दर्भों में हर रोज रंगमंच के सामने नयी चुनौतियाँ खड़ी हो रही हैं—और उनसे निपटने के लिए रंगमंच को लगातार अपने को पुन संस्कारित करना और बार बार अपने को नये सिर से तलाश करना आवश्यक हो गया है। किसी तरह के स्थायित्व या कहूँ कि जड़ता के लिए रंगमंच में आज कोई जगह नहीं है। सापेक्ष सत्य के इतने अलग स्तर और मानवीय अनुभव के इतने विभिन्न आयाम हैं कि शाश्वत की कोई सम्भावना ही शेष नहीं रह गयी। यही कारण है कि आज कोई भी अभिनेता एक निश्चित अभिनय शैली और नाट्य आलेख के सहारे बहुत कारगर नहीं हो सकता। भिन्न दर्शक समूहों और भिन्न आलेखों के लिए उसे अपने आपको नये सिरे से तैयार करना होता है—और इसके लिए उसे बराबर निर्देशक की आवश्यकता होती है। इसी तरह नाट्य आलेख में भी परिवर्तन और जोड़ने घटाने की गुंजाइश बराबर बनी रहती है। इसके लिए एक विशेष प्रकार की कलात्मक स्वतन्त्रता और लचीलापन रंग कर्म में आवश्यक है—इसे हर नाटककार और रंग-कर्मी को समझना होगा।

आज का रंगमंच तकनीकी दृष्टि से कहीं अधिक समृद्ध और उसी के साथ उतना ही जटिल भी हो गया है। अभिनेता के शरीर और बुद्धि की अपार सम्भावनाएं आज के रंगमंच ने खोज ली हैं। आज कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिसे रंगमंच पर, उसकी पूरी समग्रता और सम्भावनाओं के साथ, प्रस्तुत न किया जा सके। समय और स्थान के निरूपण में आधुनिक रंगमंच जैसी स्वतन्त्रता का अनुभव आज करता है, वैसी पहले नहीं करता था। कथानक के प्रकटीकरण में आज जैसी गति भी पहले उसमें नहीं थी। सिनेमा फोटोग्राफ्स और टेलिविजन ने चाक्षुष सम्प्रेषण की दिशा में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं—और रंगमंच भी इस क्रान्ति से अछूता नहीं रहा है।

प्रस्तुत नाटक की संरचना ऊपर से देखने में यथार्थवादी लग सकती है, और एक तरह का यथार्थवाद इसमें है भी। लेकिन यह यथार्थवाद रंगमंच का पारम्परिक यथार्थवाद नहीं है। इस पर सिनेमा की दृश्य-संरचना का काफी प्रभाव है। सिनेमा जैसी गति और चुस्ती भी इस आलेख के गठन में है। कई दृश्य ऐसे हैं जिनमें केवल एक लाइन का संवाद है—और कितने ही दृश्यों में एक भी संवाद नहीं है, बल्कि जैसे जैसे घटनाक्रम अपने चरम की ओर बढ़ता है—संवाद कम से कमतर होते चले जाते हैं। भाषा की यह 'इकनामी' नाटकीय तनाव को बढ़ाने में सहायक होती है, जबकि अधिकतर नाटकों की संरचना में इससे उल्टा होता है। अन्त तक आते-आते संवाद अधिक और बोझिल होने लगते हैं। मोहन राकेश के नाटकों तक की यही ट्रेजेडी है।

और अन्त में मैं स्पष्ट करना चाहूँगा कि प्रस्तुत रचना लू शुन की कहानी का नाट्य रूप नहीं है अपितु उनकी कहानी से प्रेरित मेरा अपना प्रदर्शन-आलेख (परफार्मिंग टैक्स्ट) है, जिसे मैंने अपने अभिनेताओं तथा अन्य सम्बद्ध रंगकर्मियों के साथ मिलकर रचा है। और मैं स्वीकार करता हूँ कि जिस प्रकार एक नाटक की कई प्रस्तुतियाँ सम्भव हैं—उसी प्रकार एक रचना (ज़रूरी नहीं कि वह नाटक ही हो—कहानी उपन्यास कुछ भी हो सकता है) के कई प्रदर्शन आलेख भी सम्भव हैं। मुझे लगता है कि इतनी स्वतन्त्रता हमें अवश्य होनी चाहिए कि हम किसी भी कृति से खुलेआम प्रेरणा ले सकें और उसे अपने ढंग, अपने तरीके से फिर फिर रच सकें। तभी रचना और रचनात्मकता दोनों बची रह सकती हैं। स्वनामधन्य कालजयी लेखकों को, जिनका लिखा पत्थर की लकीर होता है मैं केवल नमन ही कर सकता हूं। किसी तरह का रचनात्मक वास्ता उनसे मेरा नहीं हो सकता। मैं आशा करता हूं कि इस रचना के साथ मेरे साथी रंगकर्मी मेरी ही तरह पूरी छूट (केवल रचनात्मक) लेंगे और इसे अपनी तरह से प्रयोग में लेने से झिझकेंगे नहीं। वैसे मैंने स्वयं प्रयत्न किया है कि उनकी कल्पना पर जितना अधिक हो सके, छोड़ दूं।

मैं अतुल तिवारी और राजेश कुमार सिंह को धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने अवधी में संवाद रचने में मेरी सहायता की।

15 सितम्बर 1985 — भानु भारती

मंच पर

चन्द्रमा	विपिन शर्मा
तिलंगा 1	महेश नायक
तिलंगा 2	सुंदरलाल मीतू
तिलंगा-3	चक्रधर जेना
पानवाला	जयराम, टी
ठेकेदार	रामचन्द्र शेल्के
शराबी 1	करुणा देका
शराबी 2	पुष्पाजी नरू
शराबी 3	सतीश गौतम
शराबी-4	राजेश सिंह
पालकीवाले	अश्विनी शास्त्री
	विनय पाण्डे
कालू मुच्छड	पुष्पाजी नरू
पूजन	रवीन्द्र खानविलकर
दीनानाथ सिंह	श्रीवल्लभ व्यास
दीनानाथ का बेटा	अफसर हुसैन
श्रीमती दीनानाथ	हिमानी
दीनानाथ की पुत्रवधू	बानी शरद
फूला	डायना ठाकुर
सुकुल महाराज	विनय पाण्डे
सुकुल महाराज का बेटा	प्रगति शाह
श्रीमती सुकुल	विभा मिश्रा

सुकुल की पुत्रवधू	सविता प्रभुने
नौटकीवाला	मजुल किशोर वर्मा
नौटकी समत	पुष्पाजी नरू, ओम प्रकाश
जुआ खेलनेवाला	सतीश गौतम
नौटकी गानेवालियाँ	सीमा विश्वास, रेनुका इसरानी
नाचनेवाली	सुन्दरश्री
पुलिस	राजेश सिंह
छोटी नन	बानी शरद
बूढ़ा पादरी	पुष्पाजी नरू
महंत	महेश नायक
गोविन्द की पत्नी	सविता प्रभुने
पुजारी	अश्विनी शास्त्री
कप्तान	जयराम टी
सिपाही	राजेश सिंह, प्रगति शाह पसर हुसैन, श्रीवल्लभ व्यास, सतीश गौतम, सुन्दरलाल मीतू

मच-सहयोग

मच सज्जा	करुणा देका, सुस्मिता मुखर्जी
मच-सामग्री	आर एस शेल्के, अतुल तिवारी
प्रकाश	महेश नायक सुन्दरलाल मीतू, विनय पाण्डे
मुख सज्जा	बी एम व्यास, शिवकुमार शर्मा
सगीत	श्रीवल्लभ व्यास, सविता प्रभुने, हरेन भट्टाचार्य
वेश भूषा	मलाठी, एस , सविता प्रभुन, राजेश सिंह
मच-सचालन	सतीश गौतम

[भानु भारती के निर्देशन मे यह नाटक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा बहावलपुर हाउस, नयी दिल्ली मे 9, 10 11, 12 मई, 1982 को पहली बार खेला गया।]

दृश्य । 1

[सोन नदी की पट्टी पर बसा एक उदास गाँव 'इकबारी'। दिन का तीसरा पहर। गर्मी। सब-कुछ उजाड़ और खाली खाली। सिर्फ चायपान की सम्मिलित दुकान पर एक पुराना ट्रांजिस्टर पूरे जोर से बज रहा है। तीन *तिलगे वहाँ बैठे ऊब रहे हैं। तभी सामने से चन्द्रमासिंह,* जिसे गाँव में हर एक चमकू कहकर पुकारता है, उधर आता है। उम्र लगभग तैंतीस चौंतीस, दुबला बदन, माथे पर चमकते हुए दो दाद के निशान, पीठ पर धान की बोरी लादे है।]

एक तिलगा एल्यो ! चमकू आय गये।

[चन्द्रमासिंह हिकारत से उन्हें घूरता है। बोरी एक तरफ उतारकर माथे का पसीना पोछता है।]

चन्द्रमा *पान वाले से*
पण्डित तनि पान देयो।

दूसरा तिलगा हाँ भाई, चमकू का पान खिलाओ, तनि और चमक जायँ।

पानवाला अबही का कम चमकत हैं !

पहला तिलगा हाँ, हाँ, माथे पै मोटर गाड़ी की नाइ दुई बत्ती नाही जरत है ?

चन्द्रमा *गुस्से से लाल होते हुए*
तू लोग ई लाइक नही हो ।

दूसरा तिलगा अरे ! देख तो ससुर कइसन चमकत है।

[अब तक चन्द्रमासिंह पान खा चुका है और गुस्से मे पान की पीक तिलगो की तरफ थूक देता है। बोरी

उठाने के लिए झुकता है तो लपककर दूसरा उसकी चुटिया पकड लेता है।]

दूसरा तिलगा रुक तो ससुर! केहपै थूक्त है वे, तोहरी तो माँ

चन्द्रमा तोहरे पै थोडे थूका।

दूसरा तिलगा तो का अपन बाप पै थूका है बे!

चन्द्रमा तो पान खाय के थुकिबे नाही?

[पहला और तीसरा ठहाका मारकर हँसते है।]

पहला तिलगा गजब रे गजब, कइसन उफनतात हैं रे!

पानवाला अल्यो, अब झेलो।

दूसरा तिलगा भेलो काहे? अवहि बुझाई देईत है इनकर बत्ती।

चन्द्रमा हम कहित है छोड देव हमका।

दूसरा तिलगा नाही तो का कर लेबे ब।

चन्द्रमा हम तुमका कुछु कहा है?

दूसरा तिलगा नाही तू कुछो नाही कह्यो, बस तनि थूकै तो दिह्यो।

तीसरा तिलगा और पान खाय के थूकै तो जरूरी है।

दूसरे से

अब तुम सामने आय गयो तो एहमा चमकू करै का?

दूसरा तिलगा चाट आपन थूका।

पहला तिलगा अइसा?

[दूसरा चन्द्रमा को आगे खीचकर लाता है।]

चन्द्रमा हम तोहार हाथ जोरित है, अइसन जुल्म नाही करो।

तीसरा तिलगा का भवा? पत्थर होइगवा, पस्स ऽऽ ऽऽ साला!

दूसरा तिलगा हाथ जारे से कुछु नाही होई, चाट आपन थूका।

चन्द्रमा हम तोहरे पाँव परित है, हमका छोड देओ।

दूसरा तिलगा थूका चाट।

[गरदन पकडकर झुकाता है]

चन्द्रमा हमका कउनो दूसर सजा दइदेओ, ई हमसे नाही होई।

पानवाला अच्छा चलो छोडो भइया, हम फसला कराइ देत हैं।

दूसरे तिलगे से

पाँच बार ससुरे की खोपडिया दिवार से टकराय क छोड देओ।

चन्द्रमा से
ठीक है चमकू ?

[चन्द्रमा कुछ नहीं बोलता ।]

तीसरा तिलगा हाँ हाँ पण्डित ठीक कहत है। चलो इतन बहुत है !

दूसरा तिलगा जैइसे पचन की मर्जी। आरे चमकू भइया।

[दीवार के पास ले जाकर पाच बार दीवार से सिर टकराता है।]

दूसरा तिलगा एक-दुई-तीन

पहला तिलगा देख कै बहूँ नारियल फूटि न जाय।

तीसरा तिलगा हाँ कहू बतोये न गुल होई जाय।

दूसरा तिलगा अच्छा बोल चमकुआ, कौउन के का पीटिस।

[पहला और तीसरा हँसते हैं।]

दूसरा तिलगा बेटा बाप के नाही, इन्सान जानवर के पीटिस। बोल, इन्सान जानवर के पीटिस !

चन्द्रमा हाँ हाँ, इन्सान कीरा के पीटिस, नारी के कीरा का पीटिस। अब तो छोडिहो के नाही ?

[तीनो ठहाका लगाकर हँसते हैं। दूसरा उस एक तरफ ढकेल देता है। चन्द्रमा बोरी उठाकर उन्हें घूरता वहाँ से चल देता है। मन-ही मन कुछ बडबडा रहा है।]

अन्धकार

दृश्य । 2

[ताड़ीखाना । लोग खा पी रहे हैं । अच्छा खासा शोर हो रहा है । गाली गलौच चल रही है । चन्द्रमासिंह आते हैं ।]

चन्द्रमा ठेकेदार से
एक बोतल देव ।

ठेकेदार ला निकार पइसा ।

चन्द्रमा अरे देव तो, पइसा आइ जाइ ।

ठेकेदार अबही दुई रोज के बाकी हैं ।

चन्द्रमा हाँ हा भागा थोड़े जाइत है । चार दिन से धान ढोई-ढोई क ससुर पीठ छिल गयी ।
पीठ दिखाता है
देख्यो देखोऊ । अउर मलिकान कहिन पइसा काल्ह आइके ल जाओ ।
ठेकेदार से
काल मिली जाइ ।

[बोतल लेता है और बैठकर पीने लगता है । तभी नगाड़ा बजने की आवाज और शोर सुनायी देता है ।]

ठेकेदार केकर सवारी आवत है भाई ?

[दो-तीन लोग आकर बाहर देखत हैं । चन्द्रमासिंह भी बाहर आता है ।]

एक बउनो लौण्डा दिखायी देत है ।

चन्द्रमा अरे ई बाबू साहब के लरिका हैं, सहर से पढि कै आय हैं।

दूसरा सच्चे मे ?

चन्द्रमा अउर नाही तो का। बाबू साहब खूब तैयारी कीहिन है, मलकिन पकवान बनाइन है। हमहू स कहती रहें, चन्द्रमा तुमहु आय जायो, कुवर चौदहवा पास किहिन है

तिलगा एक हां हा तुमका तो जरूर खिलाइहैं पकवान, तुम तो दामाद लागत हो ना।

चन्द्रमा तो और का, हम उनकै बिरादरी मे जो ठहरे। एक बखत रहा जब हम उनहुं से मजबूत रहे। अब हमार गिरह खराब होय गये हैं

तिलगा एक ठेकेदार से

अर सुनत हा ठेकेदार। चमकू कहत है इ बाबू साहब के रिश्ते दार हे। उनहु से मजबूत रहं!

[सारे लोग हँसन लगते हैं।]

ठेकेदार काहे नाही काहे नाही, तबही तो रोज चमकू के सतकार हात है बाबू साहब के हिया।

चन्द्रमा देखो ओ ठेकेदार, हम चन्द्रमासिंह है। हमार इहै नाव लिया करो।

ठेकेदार हा-हां, ठाकुर चन्द्रिमासिंह ! बाबू साहब के खानदानी ! का भाई, ठीक है ना !

[लोग हँसते हैं।]

पहला बहुत अच्छा—ठाकुर चन्द्रिमासिंह !

दूसरा उफ चमकू !

[इसी समय जुलूस ताडीखाने के पास पहुंच जाता है। सार लोग बाहर आ जाते हैं। पालकी पर 24 25 साल का दुबला पतला नौजवान कुछ अकडा, सकुचाया बठा है। आगे एक आदमी नगाडा बजाता चल रहा है। लोग झुक-झुककर लडके को सलाम करते हैं। कुछ लोग केवल देख रहे हैं।]

दूसरा कुवर साहब चाउदह पास किहिन है। सहर मे हाकिम बनिहैं।

तीसरा अबही तो काउनो और इमतिहान पास करिकै कलट्टर बनिहैं।

चौथा अरे धत्त ससुर, चौदही के बा' कौन इमतिहान है? उहे सबस वडा इमतिहान होत है।

चन्द्रमा अरे ई ठीक कहत है। सरकार ससुर रोज नवा इमतिहान निकारा करत है। देखो ना पढि पढि कइसन दुबराय गये हैं। अरे लानत भेजो अइसी पढाई को! अइसने पढाई से देस के सत्यानास भवा है।

चौथा औउर त्यो, गाँव का लरिका कलट्टर हाय जात है और इनका सत्यानास दिखायी देत है।

दूसरा भई कुछो कहो खुसी ई बात का है कि 'इसयारी' तरक्की करत है। गाँव केर दुई लरिका चौदही पास करी गये। एक बाबू साहब के दुसरे सकुल मेहाराज क लरिका।

पहला हा, हाकिम बन जहिये तो कोरट-कचहरी मे मदद रहा करी।

चन्द्रमा अरे का मदद रहा करि! ई ससुर फिरगी चले गय और पूछ छोडि गय। अरे सहर की कौनो पढाई है! न धरम न ज्ञान न जातपात के बिचार। सब मूछ कटाय क जनखा बनि जात हैं। अब देखो इनका, पतो नाही चलत है लरिकी हैं या लरिका।

[सब हँसते हैं। चन्द्रमा जोश मे आ जाता है।]

अरे तब्बै तो कहित हैं, मूछ बिहिन कान्तहीन चेहरा है, कइस पहिचान तोहे लाली है कि साला है।

[लोग और हँसते हैं। चन्द्रमा और जोश म आ जाता है।]

हम कहित हैं ई ससुरी सहरी पढाई सबका मलेच्छ बनाय दिय है। अपन धरम-करम भूलि कै फिरगियन की चाल चलैहैं ई ससुर गाँधी बाबा होतें तो फिरस सुराज क आन्दोलन छेड दतें। और ऊ ससुर सुकुल बाबू के लरिका, जनऊ उतार दिहिन और क्रिस्तान होय गय हैं। गद्दार ससुर! ओ के खिलाफ तो हमही आन्दोलन छेड दब। कहिबे, छाडो साला भारत।

[लोगो पर चन्द्रमा का कुछ रोब पडने लगता है।]

ठेकेदार अच्छा ई बात छोडो चमकू। सही-सही बताव, का तू सच्चे म बाबू साहब के रिस्तेदार हो?

[चमकू गुस्से से देखता है।]

अल्लेयो भइया, गुस्से मे काहे देखत हो ! तुम्ही तो कहत रह्यो, हम बाबू साहब के रिस्तेदार हैं।

चन्द्रमा लेकिन हम इहो कहा रहा कि हमार नाव चन्द्रमासिंह है। बोलो कहा रहा की नाही ?

ठेकेदार हा-हाँ, भूल भई।

चन्द्रमा रोब से

सुन ल्यो सब ससुर, हमका काऊ ऐंड-बेंड नाँव से नाही पुकारे। हमार नाँव है चन्द्रमासिंह !

[ठेकेदार थोड़ा हँस देता है।]

हम मजाक नाही करित हन। एक बखत रहा जब हम बाबू साहबौ से जबर रहे ई ससुर सहरी पढाई सब नास कर दिहिस।

[ठेकेदार असमंजस मे पड़ जाता है।]

हम ठीक कहित हन। तुम ससुर, हमका समझत का हो !

[झूमता हुआ और गीत गाता वहाँ से चल देता है]

अन्धकार

दृश्य : 3

[ठाकुर दीनानाथसिंह, जिन्हें गाँव मे बाबू साहब कहकर पुकारते है, का घर। बाबू साहब तख्त पर बठे हैं। पास ही कुर्सी पर उनका बीए पास लड़का और लठत राधासिंह भी वहाँ बैठे हैं। गाव का पुलिस चौकीदार पूजन और चन्द्रमासिंह नीचे जमीन पर बठे हैं। ठाकुर साहब गुस्से म है।]

ठाकुर ससुर, तोहार हिम्मत कसे भई हमसे रिश्ता जोड़े के।

कुंवर साला, दो कौडी का आदमी!

बाबू कारे ससुर, का कहत रहे? ठाकुर चन्द्रमासिंह!
गुस्से मे दो थप्पड़ लगाकर
निकारित हैं तोहार ठकुराई—मादरचोद!

[चन्द्रमा कोई प्रतिरोध नही करता। मार खा लेता है।]

कुंवर छोडिए बाबूजी! आप क्या मुह लगा रहे हैं?

बाबू बोल फिर से कहबे, हमार खानदानी बनत है ससुर! खाल खिंचिके भूसा भरवाय देब।

राधासिंह ठोकर मारते हुए
चल भाग हियांसे, फिर कबहुँ अइसन-वइसन बात सुनायी पडी तो तोहार खर नाही। भाग!

बाबू औउर सुन ब पुजना! तोहर गाँव मे रहे से का फायदा? ई चमार-पासी सार सर प तुरहो बजई हैं?

पूजन अरे नाही बाबू साहब, कउनो के मजाल नाहि है। बस एक इहै ससुर है, चार दिन सहर मा रह आवा, दिमाग चढ गवा है

ससुर का !

बाबू तो डरवाएदे सारे का जेहल मा। दुई दिन मे अकल ठिकाने आय जाई।

पूजन उहे होई बाबू साहब।
लाठी से चन्द्रमा को धकेलते हुए
चल बे !

[चन्द्रमा चुपचाप उठकर चल देता है। पीछे-पीछे पूजन। ठाकुर पीछे से बडबडा रहा है।]

बाबू कइसन मादरचोद जमाना आई गवा है, कहार चमार इनकी मेहतारी का चोद सर चढि रहे हैं !

कुवर सब वोट की राजनीत का कमाल है।

ठाकुर अरे वोट का करि ससुर। सासन वोट से कहूँ होत है ? लाठी से होत है लाठी स ! पहिले बखत मा कउनो चू करिके देख लेत।

[इधर प्रकाश धीमा होता है। चन्द्रमा और पूजन, जो थोडा आगे निकल आये हैं उन पर प्रकाश पडता है।]

पूजन काहे बे चलैंका है थान ?

[चन्द्रमा कुछ नही बोलता।]

बहुत चपर चपर करें लाग हो ससुर गाव मा। थान मे उल्टा लटकायेकै चूतड प दुइ लाठी दव, अकल ठिकान आई जाई। नीद हराम होम गयी हमार सुबह-सुबह फटकार पडि गयी। अब खडा का है बे, थान चलैंका है ?

[चन्द्रमा इन्कार मे सिर हिलाता है।]

ला निकार, का है जब मा।

[चन्द्रमा पर कोई प्रतिक्रिया नही।]

अबे निकार ससुर !

[खुद उसकी जेब टटोलता है। दो रुपये का नोट और कुछ रेजगारी निकालकर अपनी जेब मे डालता है।]

फिर कबहूँ का या सिकायत सुना तो थाने मे उल्ट लटकाय कै छाडव। सुबह-सुबह ससुर परेसान करके रख दिहिस।

[बडबडाता चला जाता है। चन्द्रमा बहुत गुस्से मे है। उसे जाता हुआ देखता रहता है। चौकीदार जब मोड मुड चुकता है तब वो दोनो हाथो म मिट्टी उठाकर उसकी तरफ फेंकता है।]

चन्द्रमा कइसन जमाना आई गवा ससुर बेटा बाप का पीट लाग है। एक बखत रहा जब हमहू कहत रहा साला दो कौडी का आदमी! अरे तू का है ससुर, जनखा! चौउदह का पास कर लियो तो अपने का कलट्टर समझे लाग्यो। हमार बिटवा होई तो तुम्हरो से बडा हाकिम बनि। ओउर ई सार पुजना, हमका थानेकेर डर दिखावत है। एक-एक का ससुर देख लेब, पूरे गाँवे का देख लेब, सब साले हरामी की औलाद हैं।

[मूछो पर ताव देकर एक विरहा गीत गाता हुआ ताडी खाने तक पहुँचता है, जहाँ पहले से मजमा लगा है।]

चन्द्रमा ठेकेदार से
एक बोतल देव।

ठेकेदार हाँ-हाँ, काहे नाही चन्द्रमासिह!
बोतल देते हुए
लेव।

पहला का हो चन्द्रमा भईया?

चन्द्रमा एक नजर डालकर और बोतल हाथ मे लेकर वहाँ से चलते हुए
बोतल आई जाई।

[ताडीखाने से निकलकर गीत गाने लगता है।]

ठेकेदार सुना बाबू साहब बहुत गरमात रहे?

पहला अर हम अपनी आँखन स देखा, दुई तमाचा लगाइन रहा चमकू का अपन हाथ स!

दूसरा तो लगइहें नाही? ससुर बाबू साहब स रिस्तेदारी जाडत रहा।

ठेकेदार भाइ हो सकत है ई बात म कुछ सच्चाईऊ होय। चमकू बहुत नाहि रहा, ऊ बाबू साहब से जबर रहा। अब दिन तो फेहु के फिर सकत हैं। अब 'आयर' का ऊ मिच्चू याँ नाही रहा? पूरे तीन सो बिघहा का मालिक रहा। जआ-कचहरी सब बरबाद कर दिहिस। अब तो पतै नाही की कहाँ बिलाय गवा। अइसनो होई सकत है कि चमकू की नाइ कहूँ और मजूरी करत होय।

तीसरा हाँ भईया, पुरस बली नही होत है समै होत बलवान।

चौथा अरे नाही, अगर खानदानी होते तो बाबू साहेब चमकु की मददै करतें—गुस्सा काहे करतें ?

पहला ई फेर मा ना रहो। आजकल कौउनो मदद नाही करत है, चाहै ऊ रिस्तेदार हो चाहे पटटीदार।

दूसरा हाँ भैया बुरा बखत पडै पै तो आपन बिटवा भी पहिचाने से इनिकार कर देत है।

अंधकार

दृश्य : 4

[कुएँ के पास के खाली चबूतरे पर बैठा कालू मुछन्दर अपने कपड़ों से जुए निकाल रहा है। उसके सारे शरीर पर दाद हैं। चन्द्रमा को इस आदमी से सख्त चिढ़ है। वो उसे देखकर मुंह बिगाड़ता है और ज़ोर से ज़मीन पर थूक देता है। कालू उसकी परवाह नहीं करता, चुप चाप बैठा जू निकालता रहता है। वो जू मारकर खाता जाता है। उसे देखकर चन्द्रमा को भी खुजली होती है और वह भी बनियान उतारकर जू खोजने लगता है। लेकिन बहुत तलाशने के बाद उसे केवल दो-तीन जूए मिल पाती हैं। अब तक कालू कई जू मार चुका है। चन्द्रमा को इससे चिढ़ होती है। गुस्से से बनियान फेंक-कर खड़ा हो जाता है।]

चन्द्रमा बन्दरवा सार, चील र बीन-बीन खात है!

कालू खजहा कुकुर सार, गारी केका बके बे?

चन्द्रमा जेकर नांव मिलत हाय ऐसे।

[कालू अपनी सदरी पहनकर खड़ा हो जाता है।]

कालू का है रे तोर हड्डी खुजात है!

चन्द्रमा का कहिस र!

[कालू को मारने के लिए हाथ उठाता है मगर कालू उसको गिराकर उसकी चुटिया पकड़ लेता है और चबूतरे की तरफ खींचता है।]

चन्द्रमा भला आदमी आपन जुबान इस्तमाल करत है हाथ नाही।

कालू तेरी भला आदमी की

[चबूतरे से उसका सिर टकराता है। चाय की दुकान पर बठे तिलगियो मे से एक है—]

एक गजब रे गजब, आज कालुओ चमकू के पीट दिहिस !

दूसरा हाँ रे, आज तो सच्चे म बेटा बाप के पीट दिहिस।

तीसरा का हो मुच्छड !

[सब हँसते हैं। कालू वहाँ से चल देता है। चन्द्रमा गुस्से म चाय की दुकान पर बैठे लोगो और कालू को घूरता है।]

चन्द्रमा स्वगत

सरकार चौउदह पास लोगन के नौकरी देवब बन्द कर दिहिस ई बात साइद सच्च है तबही तौ, बाबू साहब के खानदान की इज्जत कम होय गयी। नाही तो ई सार बन्दरवा केर मजाल कि हम पर हाथ छोड़ब।

[तभी सुकुल बाबू के घर से जोर का शोर उठता है। उनके लड़के की बीवी कुएँ म कूद जाना चाहती है। लोग उसे रोक रहे हैं।]

बीवी छोड देव हमका छोड देव हम जान द देब। हमार तो भाग फूटि गवा। अब हम जी कै का करबै।

पडोसन एक अरे नाही रे बसन्ती पागल होय गयी हौ का !

बीवी हाँ हम पागलै होई गयी हैं। मान मरजादा खाय क पागल नाही होईबै? हम कहित हैं। हमका छोड देव। हम कूद जाई कुआ मा। हम मर जईबे, हमसे ई अधरम नाही बरदास होत है।

[तभी सुकुल का लडका बाहर आता है।]

लडका क्या तमाशा मचा रखा है? चलो घर के भीतर।

बीवी हाँ-हाँ, तमासा तो हम ही मचाये हैं। जात धरम भूलि के हमही न क्रिस्तान होई गयी हैं? हमसे ई अधरम नाही सहा जात। बिरादरी मे हम मुह दिखावैं लायक नाही रहीं। अरे हमार तो किस्मतै फूटि गये।

[तभी बसन्ती की सास भीतर से आती है।]

सास का रे बसन्तिया ऊल जलूल बकत है। हमरे लरिका के कासियो तो ठीक नाही होई। कइसन गऊ अस लरिका है हमार, सहर मा मलेच्छ धोका से मास खिलाय दिहिन तौ कौन बडा पाप होई गवा ?

बसन्ती धोके से नाही खहिन मर्जी ते खाहिन है अपनी मर्जी ते। धरम से बिसवास उठ गवा है इनकर। कहत हैं जात-बिरादरी बेकार के लफडा है। तब्बै न जनेऊ उतार फेंकिन। अब चाहत हैं हमऊ धरम करम छोड कै इनके पीछे चली। हमसे नाही होई सकत है ई सब। हम कुआ मे कूद कै जान दे देई पर धरम नाही छोडिबे।

सास चल रे चुडैल चार लोगन मे धरम दिखावत है। जनेऊ तो सुद्धी के खातिर उतारिस हैं, कासी जाय कै दुबारा पहिन आई।

लडका अब आप लोग य तमाशा बन्द करेंगी या नही। खामखा मजाक बना रखा है। जिसे कुए मे कूदना हो वो शौक से कूदे, मैं जनेऊ वनेऊ नही पहनने वाला। मैं साफ कहता हूँ, मेरा कोई विश्वास नही है इस धरम करम पर। सब ढकोसला है। जिसकी जा मर्जी आय बिगाड ले मेरा। सुन लिया। चलो अम्मा भीतर।

[मा को पकडकर भीतर ले जा रहा है। मा कुछ बडबडा रही है जो सुनायी नही देता। बसन्ती बुक्का फाडकर रोने लगती है।]

बीवी आसपास जमा लोगों से
सुन लेव सुन लेव अरे हमार भाग फूटि गये। अरे मोर अम्मा रे अब हम कहाँ जाई।

[रोती रहती है। और औरतें इकट्ठा हो गयी हैं। पडोसिन चुप करके उसे अपने घर ले जाती है। चन्द्रमा सिंह के अलावा और चार-पांच लोग वहाँ जमा हो गय हैं। चन्द्रमा बहुत गुस्से मे है।]

चन्द्रमा सुनैबा भइया, ई है सहर की पढ़ाई। साले फिरगियन की अऊलाद, गद्दार ससुर, अपन धरम का गारी बकत है। चार अच्छर का पढ़ि लिहिन, धरमै का गारी बकै लाग। खुले आम कहि गय

जे का जो करें का हो करि लै—त्यो बोला। अब तो अन्दोलन करिब का पडी, गाधी महात्मा की जय, गद्दारो भारत छोडो छोडो साला भारत।

[तभी सुकुल का लडका हाथ मे छडी लिये भीतर से आता है। चन्द्रमा एकाएक चुप होकर मुह फाडे उसे देखता है। *तभी पीठ पर छडी पडती है।*]

लडका ठहर गाधी की औलाद! क्या बका बे, साला नेतागिरी करता है! मैं निकालता हू तेरी नेतागिरी!

[दो-तीन छडी और मारता है। चन्द्रमा एकाएक वहा से भाग खडा होता है। वहा जमा लोग हँस पडते हैं! लडका उन्हे घूरकर देखता है, तो वे सहम जाते हैं और फिर वहा से चल देते हैं।]

अन्धकार

[मन्दिर मे चन्द्रमा की कोठरी। चन्द्रमा अपनी गुदडी पर पडा करवटें बदल रहा है। वो दद के मारे सीधा नही लेट पा रहा है। रह रहकर उसके मुह से आह निकल रही है। एकाएक वह बोल पडता है।]

चन्द्रमा कईसन जमाना आई गवा है। बेटा बाप के पीटैं लाग।

[एक ठण्डी आह भरकर नीद मे डूब जाता है और खर्राटे भरने लगता है।]

दृश्य : 5

[गाव से थोड़ा बाहर एक नौटकी शुरू होनेवाली है। भीड़ जमा हो रही है। लोग आ जा रहे हैं। नौटकी से थोड़ा दूर कुछ खोमचेवाले आदि है। एक जगह तख्त पर जुआ हो रहा है। अचानक भीड़ म थोड़ा हल्ला होता है। एक औरत जोर-जोर से चिल्लाने लगती है। चद्रमा ने उसे चुटकी काट ली है। वह चुपचाप वहाँ से खिसक कर जुए के तख्त के पास आ जाता है। चकरी पर चद्रमा दाव लगाता है। वो जीतता है। जसे-जसे वो जीतता जाता है, उसका उत्साह बढता जाता है। ऊँचे दांव लगाने लगता है। किस्मत उसका साथ दे रही है। वो जीत रहा है। उसके पास काफी पसे इकट्ठे हो गये हैं। तभी अचानक फसाद शुरू हो जाता है। पता नहीं चलता कि क्या हुआ। जबरदस्त धकापेल। लोग इधर उधर दौडते भागते हैं। जुएवाला अपना सामान लेकर चम्पत हो चुका है। दो चार पुलिसवाल सीटियाँ बजात लाठी चलाते आते हैं। एक पुलिसवाल न चद्रमा को पकड़ा हुआ है।]

पुलिस का है ब ससुर, जुआ मलत रहा ? ऊपर स फसादौ मचाय रखा है।

[चद्रमा को बहुत मार पडती है। उसके सारे पसे भी भगदड म छिन गय हैं।]

चद्रमा स्वगत

बेटव पीटत नाही हैं पइसवा छिनाय लई जात है। सब दोम

बचत का है। कितना ढेर सारा पैइसा होई गवा रहा। इतना अब कबहुँ नाहीं देखे मे मिली। हमार ससुर किस्मतै फूटि है। हम तो हँई है कौरा, नारी का कौरा।

[वह अपने गाल पर कसकर दो तमाचे लगाता है और थोडा हल्का हो लेता है। भर आयी आखें पोछता हुआ वह नौटकी की ओर चल देता है, जहा फिल्मी गाने पर एक घटिया डास शुरू हो चुका है। डास देखते हुए चन्द्रमासिंह वहीं पसर जाता है और सो जाता है।]

अन्धकार

दृश्य 6

[ताड़ीखाना। चन्द्रमा बैठा हुआ पी रहा है। वह बहुत मजे में है। उसके पास चार पाँच लोग बठे हैं। वो उन्हें शहर के किस्से सुना रहा है।]

चन्द्रमा अरे ई तो मसुरी कुछु नाही रही, चवन्नी भरी के नाही! बाईस कोप की पतुरिया केर कौनो मुकाबिला है? नाच तो भइया उन्ही के देखेवाला होत है। सहर मा तो जगैह्-जगैह् बाइस कोप होन है। टिकस खातिर लम्बी लाइन लागत है। अन्दर घुसो तो तबियत हरा होई जात है। बठे के लिए गद्दादार कुर्सी, चारो ओर सीसा ही सीसा लागा है जैसे कउनो राजा केर महल होय।

[तभी एक तिलगा अन्दर आता है।]

तिलगा का र चमकुआ, आज तो बहुत चहकत है!

ठेकेदार सुबहिय से बइठा चढाय रहा है। चहकी नाही?

तिलगा तबही आज राउसनी जादा होन है। देखौ तो जइसे कपूर केर दिया जरत होय।

[चन्द्रमा जो अब चुप हो गया है, गुस्से से उसे घूरता है।]

तिलगा खार घरत तो अइसे है जइस चबाय जाइ! का है भइया लोगन कपूर केर दिया नाही जरत है एकर माथ पै।

[सब ठहाका लगाकर हसन हैं।]

चन्द्रमा तुम समझन का हो अपने का, हाँय!

तिलगा तोहार बाप !

[तभी बाबू दीनानाथ की नौकरानी धड़धड़ाती अन्दर आती है।]

फूला चमकू है का हियाँ ?

तिलगा हाँ हाँ, दिया जराय के तोहरे बाट जोहत हैं।

फूला चुप रे मुआ !

चन्द्रमा से

हे चमकुआ, मालकिन बोलहिन हैं पसेरी-भर धान कूटें का है, काल्ह आय जाओ।

[चन्द्रमा कोई जवाब नहीं देता।]

फूला का रे सुनः नाहो ?

चन्द्रमा हाँ हाँ सुन लिहा, आय जाइब।

[फूला वापस जाने लगती है।]

ठेकेदार अरे का रे चमकुआ, फूला के नाइ पिलइब ?

[फूला गरदन मटकाकर वहाँ से चल देती है। चन्द्रमा आँखें फाड़े उसे देख रहा है। एक बूढ़ा ग्राहक बोलता है—]

ग्राहक-1 कुछऊ कहो, चमकू काम अच्छा करत है।

ग्राहक-2 तबही तो एकर पूछ होत है एतना।

तिलगा हाँ मार भलै पड़ै, पर काम के बखत याद चमकूये आवत है।

चन्द्रमा तुहँ लोग इह लाइक नाही हौ कि

[लड़खड़ाता हुआ वहाँ से उठकर चल देता है। बाहर उसका सामना एक छोटी उम्र की नन से हो जाता है।]

चन्द्रमा ससुरी क्रिस्ताईन, कुल मज किरकिरा कर दिहिस। आऽऽ थू !

[जोर से थूकता है। नन उसकी ओर ध्यान नहीं देती, सिर नीचा किये तेजी से कदम आगे बढ़ाने लगती है। चन्द्रमा उसे लपककर पकड़ लेता है।]

चन्द्रमा अरे कहा भागी जाय रही है, बुढ़ा पादरी बाट जोहत है का ?

नन कौन हो जी तुम मुझे छूनवाले ?

[ठेके पर बैठे लोग खिलखिलाकर हँस देत है। चन्द्रमा का उत्साह और बढ जाता है।]

चन्द्रमा काहे ? ऊ सार बूढा पादरी छुई सकत है, हम नाही छुई सकीत, हयँ ।

[उसका गाल मसल देता है। ठेके के लोग और ज़ोर स हँसत हैं। चन्द्रमा और मजे मे आ जाता है। वह एक बार फिर नन का गाल जोर से मसल दता है।]

नन छुडाकर भागते हुए
भगवान कर तू निपूता ही मर जाय।

[चन्द्रमा खिलखिलाकर हँस पडता है। ठेके के लोग गजब रे गजब, सावास चमकू कहते है। चन्द्रमा बहुत हल्का, प्रफुल्लित महसूस कर रहा है। वह लगभग उडता हुआ मन्दिर की अपनी कोठरी मे पहुँच जाता है। उस महसूस हो रहा है जैसे कि उस नन के चेहरे की कोई मुलायम और कोमल वस्तु उसकी उँगलिया स चिपक गयी है।]

चन्द्रमा स्वगत
तू निपूता ही मर जाय।
हँसकर फिर एकाएक गम्भीर होते हुए
हमरो मेहरारू होव का चाही। अगर हम निपूते मरी गयन तौ हमार पिण्डदान का करी। मेहरारू बहुत जरूरी चीज है।
  मेहरारू मान औउरत, सार बूढा पादरी, जरूर ओका छुअत होई औउर भी ता कितनी क्रिस्तानिया आसरम म भरे है हरामी ससुरे क्रिस्तीयन के पिटठू बइसे छोकरी बहुत अच्छी रही, ससुरी क गाल कइसन मुलायम रहे। हमहू का अइसने एक औउरत चाही।

[धीरे धीरे नीद म डूब जाता है।]

अन्धकार

दृश्य : 7

[बाबू दीनानाथ की दालान में धान कूटना रोककर चन्द्रमा बैठा चिलम पी रहा है। फूला अन्दर से आकर उसके पास बैठकर बातें करने लगती है।]

फूला तोहे मालूम है चमकू मालिक रखैल लाय रहे हैं ! काल्है से घर मे कोहराम मचा है। दुई दिन होइ गये मलकिन खाना नाही छुईन।

चन्द्रमा स्वगत
अछरत !

[फूला को आँखें फाड़े देखता रहता है।]

फूला सुना तो इहो है कि कुअर भी सहर में कोहु का राखे हैं। उनही केर साथ पढत रही। कउनो दूसर जाति केर है अपनी मेहरारू का छोडि के ओहसे बिहाव की ठाने हैं। छोटी मलकिन के रोय रोय के हाल-बेहाल होइ गवा है। तीन महीना का पेट है उन कर। बेचारी ! सच्चौमे इन मरदन केर कउनो भरोसो नाही। जिन्दा रहत दुख दें, मरी जायें तब्बो कहूँ के न छोडैं।

[चन्द्रमा अचानक उसके पैरों पर गिर पड़ता है।]

चन्द्रमा आ, हमरे साथ सोई जा !

[फूला एकाएक सन्नाटे में आ जाती है, फिर 'हाय माँ' कहती भाग जाती है। चन्द्रमा भी अवाक रह जाता है। उसे धुंधला-सा आभास हो रहा है कि कुछ न-कुछ घपला हो गया है। वह चिलम कमर में खोसकर धान कूटने

घूमकर देखता है तो मालिक का लडका हाथ मे बाँस लिये खडा है।]

लडका तुझे हिम्मत कैसे हुई, इतनी हिम्मत कसे हुई ?

[चन्द्रमा अपना सिर दोनो हाथा मे छिपा लेता है तो बाँस उसकी उगलिया पर पडता है। दद से उसकी चीख निकल जाती है। वह वहाँ से भाग खडा होता है।]

लडका अबे ओ कछुए की औलाद ! ब्लडीफूल !

[चन्द्रमा बाहर आकर जल्दी-जल्दी धान कूटने लगता है।]

चन्द्रमा बल्लदी फल, अइसन गारी तो सरकार कर हाकिम देत है।

[वह बेहद डर जाता है।]

सार कीरा, नारी कर कीरा। अब कवहु औउरत के बारे म नाही साचब।

[वह आर जोर स धान कूटन लगता है। गर्मी लगती है ता रुककर कमीज उतार देता है। तभी उस अन्दर कोलाहल सुनायी देता है। दालान म काफी लोग जमा हो जात है।]

मालकिन अरे तुम काहे दुखी हात हो। ईमा तोर कउना कसूर तो है नाही ?

फूला हम मर जाब मलकिन ! कुआँ मे कुदिके जान देई देब ! हाय, हम विधवा मुआ कालिख पोत दिहिस होत तो कहाँ जाईत हम।

मालकिन आरे नाही रे तू काहे जान देब ? कुआँ मे कूदय ऊ मुआ घमडू। हरामी के आउलाद !

बाबू साहब कहाँ गया ससुरा ?

लडका वो रहा कछुए की औलाद ! कैसे शरीफ बना धान कूट रहा है।

[बाँस लिय चन्द्रमा की ओर लपकता है। चन्द्रमा सिर पर पाँव रखकर भागता है। फूला जोर-जोर मे रोती है।]

अन्धकार

दृश्य : 8

[चन्द्रमा मन्दिर की अपनी कोठरी में घबड़ाया बैठा है।]

चन्द्रमा स्वगत
अच्छा तमासा है ससुर, ई बित्ते भर की बेवा न जाने कउन गुल खिलावे के चाहत है।

[तभी पूजन बड़बड़ाता हुआ अन्दर आता है।]

पूजन तोर सत्यानास होय चमकुआ। ससुर तू बाबू साहब की नौकरानिया पै हाथ साफ करे के चाहत रह्यो? हमार नींद हराम करके रख दिओ है। तोर सत्यानास हो।

[चन्द्रमा कुछ बोलता नहीं। आँखें फाड़कर देखता है।]

अब का देखत है बे, चल थाने। ससुर चमड़ी उधड़ी तब पता लागी।

[चन्द्रमा चुपचाप उठकर चलने लगता है।]

अबे कहाँ चल दियो?

चन्द्रमा थाने—तुमही तो कहा।

पूजन भल्यो, सार अइसे तइयार होई गवा जइसे ससुरारे जात होय। सार, जब हण्टर पड़ी नानी याद आय जाई।

[चन्द्रमा असमंजस में पड़ जाता है।]

अबे हैइ कुछ देव-दाय के बाबू साहब से छिमा माँग ले, थाना में सब गवईबो करिहो, अऊर कूटे जईहो सो अलग। अब हमका

गाव केर खयाल है। बात चारि लोगन के बीच ना पहुँच सोई अच्छा है। काव समझेव ?

[चन्द्रमा असमजस मे सिर हिलाता है।]

काल सुबहियै बाबू साहब के हियां एक कट्टा धान अउर एक भेली गुड जुरमाना पहुचाय के देहरी पै नाक रगडि आव, अउर दुबारा उह तरफ मुह न फरेब, बहुत गुस्सा मा हैं, समझेव ?

चन्द्रमा हाँ।

[गर्दन हिलाता है।]

पूजन अउर सुन, फूला केर सुद्धी के खातिर मलिक्न हवन करइहैं। आकर खरचौ पहुचाय दिहौ, और अगर कबहु फूला क कुछु होई गवा ता ताहर माथ पडी, ई समझ लब।

[चन्द्रमा सिर हिलाता है।]

ससुर नीद हराम होइ गवा। ला निकार पांच रुपिया।

चन्द्रमा रुपिया तो नाही है, काल्ह बाबू साहब स मजूरी मिली

पूजन चुप ब मजूरी क अउलाद, घर केर इज्जत बिगाड के रख दियौ, ऊपर स ससुर मजूरी चाही ? ऊ तौ बाबू साहेब सरीफ आदमी है नाही ता

[वो कोठरी म इधर उधर निगाह डालता है। उस चन्द्रमा का जकट दिखायी पडता है। उस उठाकर बुरा सा मुह बनाता है और चल देता है।]

जाते हुए
सार भुक्खमर्रा !

अन्धकार

दृश्य : 9

[बाबू साहब के घर का दालान। बाबू साहब मूढ़े पर बठे है। उनकी बगल म स्टूल पर उनका लडका बठा है। पीछे बाबू साहब की बीवी और बहू खडी है। पूजन भी वहा है। चद्रमा चावल और गुड बाबू साहब के सामने रखकर नीच नाक रगडता है, फिर अण्टी से कुछ रुपये निकालकर मालकिन के सामने रख देता है।]

बाबू साहब चल भाग हिया से। फिर कबहुँ एहर पाव रखवो ता जेहल भेजवाय दव।

[चद्रमा उठकर चलने लगता है, फिर अचानक ठिठक कर धीरे से बडबडाता है—]

चद्रमा ऊ हमार कमीज

लडका क्या ?

पूजन का है व वहा न भाग हिया से।

चद्रमा ऊ हमार कमीज हिय छुटी गई रहै। पहिने के दूसर कुछौ नाही है

लडका अबे चल यहा से नही है कोई कमीज-वमीज।

[च द्रमा चल देता है, तभी मालकिन को कुछ याद आता है।]

मालकिन अरे तनिक रुक रे।

बाबू साहब काहे ? का भवा ? कहि दिया न, नाही है कउनो कमीज।

मालकिन एह का फूलो स माफी माग क चाही, ऊ बीचारी का राय राय के बुरा हाल होई गवा है।

लड़का गुड आइडिया, परफेक्टली डेमोक्रटिक !

आवाज देते हुए

फूला, ओ फूला

फूला *अन्दर से*

का है मालिक !

मालकिन हियां आ बाहिर।

[फूला बाहर आती है।]

मालकिन *चन्द्रमा से*

चल माफी माग ए से।

[चन्द्रमा फूला की तरफ बढ़ता है। वह चीख़ मारकर मालकिन से लिपट जाती है। चन्द्रमा हतप्रभ होता है। जल्दी से नाक रगड़ देता है।]

मालकिन हाय बिचारी नेक औउरत, देखब तो कइसन डराय गयी है।

लड़का चल अब दफा हो यहाँ से।

[चन्द्रमा चल देता है। पूजन भी बाबू साहब को सलाम करके पीछे हो लेता है।]

पूजन अब कहाँ से आवा बे इत्ता रुपिया। रात तो साफ दाँव दई गयौ हमका।

चन्द्रमा आपन बिस्तरा बेच दिहिन।

पूजन शुकर करो सस्ता मा छूटि गया, वरना जेहल म चक्की पीस पड़त। सारा निमक हराम सा, जरूर बचा है निकार। कालहँ से परेसान किये है।

[चन्द्रमा बिना कुछ कहे टेंट में से एक नोट निकालकर दे देता है।]

कौनो जमाना आ गवा है ससुर !

[चन्द्रमा रुककर कुछ देर उसे जाते देखता है, फिर बहुत खुश होकर ठेके पर जा पहुँचता है और दूसरी टेंट म रुपया निकालकर ठेकेदार की ओर बढ़ता है।]

चन्द्रमा देब एक बोतल।

अन्धकार

[चन्द्रमा रास्ते में सर्दी से ठिठुरता हुआ एक गीत गुनगुनाता चला जा रहा है। कुछ औरतें जो अपने घरों के बाहर खडी बात कर रही थी, एकाएक सकपकाकर घरों म घुस जाती हैं और दरवाजे ब द कर लेती हैं।]

चन्द्रमा ई सारी अउरतनका का होई गवा है? एकदम नयी-नवेरी दुलहिन की नाइ सरमात है, जइसे हम इनका खाय जाइब!

[अचानक ठिठककर अपने गाल पर थप्पड मारता है।]

अब ओये चन्द्रमा, फिर अउरतन के बारे म सोच्यो!

[वह सुकुल साहब के घर के बाहर ठिठककर खडा हो जाता है। थोडी देर कुछ सोचता है, फिर जल्दी से हाथ बढाकर दरवाजे की कुण्डी खटखटा देता है। सुकुल के लडके की बीवी दरवाजा खोलती है। चन्द्रमा को देखकर 'ओई माँ' कहती अन्दर भाग जाती है। तब सुकुल साहब का लडका बाहर आता है।]

लडका क्या है रे बदजात! किसी शरीफ घर की कुण्डी खटखटाने की हिम्मत कैसे हुई?

चन्द्रमा सरकार, कउनो काम-काज

लडका चल भाग यहाँ से!

[दरवाजा बन्द कर देता है। चन्द्रमा बहुत पस्त वहाँ से चलकर ताडीखाने पहुँचता है।]

चन्द्रमा ठेकेदार से

कुछु पिलाय देव भइया !

ठेकेदार पइसा है ?

चन्द्रमा नाही ह। पतय नाही, ससुर गाव वालन के काव होई गवा है, काइ काम नाही देत है। पहिल पीछै लागि रहत रहैं। दुई दिन होई गवा, कुछु नाही खायन।

ठेकेदार तो का हम भण्डारा खोले हन ?

चन्द्रमा अरे बहुत सर्दी लागत है, तनिक गरमाय जाईब।

ठेकेदार चल, चल, कुछु नाही ह, भाग !

चन्द्रमा अरे तो का पईसा आय नाही जाई ?

ठेकेदार कहा न तोसे उधरा नाही मिलि है। सुबहिये सुबहिये आय गय ससुर झकझक करै कै।

चन्द्रमा अरे, एक कुल्हड़ पिलाय देब।

ठेकेदार अब भागत है या

[लकड़ी उठाकर उसकी ओर आता है। चन्द्रमा भाग खड़ा होता है। ठेके पर बैठे लोग हंसते हैं। ठेके से बाहर उसे पतला दुबला 'बुधवा' आता दिखता है। चन्द्रमा का पारा एकदम चढ़ जाता है। वह अपना बाजू उठाकर अचानक चिल्ला पड़ता है।]

चन्द्रमा इनकिलाब जिन्दाबाद !

[बुधवा थोड़ा सहमता है, लेकिन चुपचाप निकल जाना चाहता है।]

चन्द्रमा अबे ओये चिमगादर की औलाद भागत कहाँ है बे !

बुधवा हम तुमसे कुछो कहा का ?

चन्द्रमा अब तू का कहिबे ? ससुर कीरा !

बुधवा अच्छा हम कीर सही हमका जाय तो देव।

चन्द्रमा अब एक तो हमार राजा छानत हो, ताहरी इतनी मजाल !

[झपटकर उसके बाल पकड़ लेता है। बुधवा भी उसके बाल पकड़ लेता है। धीरे धीरे भीड़ जमा हो जाती है। चाय की दुकान पर तिलक और कुछ लोग बैठे हैं।]

तिलक एक अरे देखो तो दुई सांड लड़त हैं।

[बाकी लोग हंसते हैं।]

दृश्य : 11

[चन्द्रमा भूख और सर्दी से बेदम और उनीदा मन्दिर की अपनी कोठरी मे पडा है। तभी मन्दिर का पुजारी अन्दर दाखिल होता है।]

पुजारी अरे ओये चमकुआ हरामी ससुर, अबही तु निकरेया नाय। आलसी, दिनन भर ससुर ऊँघा करत हो। ई मन्दिर है मन्दिर, समझेव, कउनो लोफरो-लफगो केर अड्डा नाही है। अरे दीनो धरम केर फिकर नाही है, कम स कम भगवान से तो डरो ई लोक के नाही तो परलोक के तो फिकिर करो। तुम ई मन्दिर छोडि के चले जाव, हामन का अच्छा नाही लागत है कि तुम हियाँ रहो।

[चन्द्रमा पर कोई असर नही होता है। वह कसमसाकर एक बार उसे देखता है फिर करवट बदल लेता है।]

अरे तोहरे कानपे जू नाही रेंगत। इतन दिन से बक-बक करित हन, लेकिन तोहरे प काहे असर होई, उठाईगिरा बदमास! अरे हम हाथ जोरि के कहित हन हियाँ से आपन बोरिया बिस्तरा उठाय लेब? आपन तो रोजी रोटी गँवा बइठ हो, अब हमार काहे रोजी छीन प तुने हो? मालूम है काल आरती मा कुल साठ पइसा आये।

[चन्द्रमा पर अब भी कोई असर नही होता। वह उसी तरह पडा रहता है।]

हम बहुत लिहाज करि लिया अब नाही करिबे। भलाई यही मा है हियाँ से चल दउ, वरना सोमन के बालाई के पिकवाई

देव बाहर, सुन लियो ! ई धरम केर स्थान है, कौउनो तोहरे बाप केर जागीर नाही। हे बजरंगबली, कइसन जमाना आइ गवा हवन करै से भी ससुर हाथ जरत हैं।

[बड़बड़ाता हुआ चला जाता है। पुजारी के बाहर जाते ही चन्द्रमा उठकर बैठता है। बहुत ही अशक्त है। उठने के लिए उसे प्रयत्न करना पड़ता है।]

चन्द्रमा आज चार दिन होई गये, आँत खिंचत है। ई नाहीं कि कुछ खाय केर देई देव। लई-दँय के एक सर छुपावे के कोठरी है, उहो छीने के चाहत है। जाई कहा, है कउनो ठौर। कउनो ससुर सीधे मुँह तो बात करत नाही। कहत हैं ना मुसीबत अकेले नाही आवत, चारो ओर से घेरत है। लेकिन चनदिरमासिंह, अब तोहार का होई ! जब खाय कमाय क मिलत रहा, तो केतना बार रास्ते मा पइसौ पड़ा मिल जात रहा, अब जमीन पर आख गड़ाय के चलित हन पै मजाल है ससुर एक पाईऊ मिलौ जाय।

[तभी जैसे उसे कुछ याद आता है। वह अपनी गुदड़ी झाड़कर टटोल-टटोलकर देखने लगता है। फिर सारे आले ढूढन लगता है। उसे कुछ नही मिलता।]

सब ससुर कहानी किस्सा केर बात होत है के आदमी जब चारो तरफ से हतास होई जात है तो भगवान ओकर मदद करत है। रोजय कउनो चमतकार के आस करत हन। हियाँ से हुआ भटकत हन, मुला कुछौ हाथ नाहीं लागत। लेकिन चनदिरमा अइसे पड़ा-पड़ा तो भूख मे मरि जईयो, कुछु तो करिहिं का पड़ी। अब ई गाव मा रोटी नाही है, तो छोड़ो गाँव। अऊर कहूँ नाही तो सहरे चलो एक बार फिर।

[हिम्मत बटोरकर उठता है। अपनी फटी जैकेट पहनकर बाहर निकल आता है। ठेके के सामने से होकर गुजरता है, लेकिन उसका ध्यान आज किसी ओर नही है। चलते हुए गिरजाघर के बाहर रुकता है।]

भीतर बाग मा जरूर कुछु फल-सब्जी मिली जाई।

[वो एक पेड़ पर चढ़कर अहाते के भीतर कूद जाता है। इधर-उधर देखन के बाद वह मूलियाँ खोदना शुरू कर

देता है। तभी भीतर के दरवाज़े से एक सिर झाँकता है। यह वही छोटी नन है। चन्द्रमा जल्दी जल्दी तीन चार मूलियाँ उखाड़कर जैकेट के भीतर लपेट लेता है। तभी एक बूढ़ा पादरी हाथ में लाठी लिये बाहर निकलता है।]

बूढ़ा पादरी भगवान ईसू हमारी रक्षा करे। अरे चमकू तू हमारे बगीचे में सब्जी चुराने क्या आया है? ये कितना बड़ा पाप है। ईसू हमारी रक्षा करें।

चन्द्रमा हम कहा तोहर बाग मा घुसिन, कहाँ तोहार सब्जी चुरायन।

[वहाँ से चल देता है। बूढ़ा पादरी पीछे आता है।]

बूढ़ा पादरी चुरायी हैं अभी अभी तुमने मूलियाँ चुरायी हैं। देख वो क्या है?

चन्द्रमा ई तुम्हरी हैं। का सबूत है ईका।

[यह कहते कहते अचानक तेजी से भाग खड़ा होता है और दीवार फाँदकर अहाते के दूसरी तरफ कूद जाता है। अब तक अन्दर से बहुत सारी ननें बाहर निकल आयी हैं और यह तमाशा देख रही हैं।]

बूढ़ा पादरी कैसा ज़माना आ गया है।

छोटी नन भगवान करे ये चमकू निपूता ही मर जाय।

[बूढ़ा पादरी उसे घूरकर देखता है। वो सकपका जाती है।]

बूढ़ा पादरी हमें अपनी ज़बान खराब नहीं करनी चाहिए। ईसू ने कहा है मानव मात्र से प्रेम करो। पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। ज़माना बहुत खराब है। हे प्रभु अब तू ही हमारी रक्षा करना।

[सारी ननें एक साथ आमीन कहकर प्रार्थना करती हैं।]

अन्धकार और मध्यान्तर

दृश्य : 12

[ताड़ीखाना। चन्द्रमा कमरबन्द से मुट्ठी भर सिक्के निकालकर खनखनाते हुए ठेकेदार के सामने पटकता है। आज वह फटी पुरानी जैकेटवाले चन्द्रमा से बिल्कुल भिन्न है। उसन नये अस्तरवाली जैकेट पहन रखी है और कमर से बड़ा सा बटुआ लटका रखा है।]

चन्द्रमा देव चार बोतल !

ठेकेदार अरे चमकू !

चन्द्रमा चनदिरमासिह !

ठेकेदार हा-हाँ चन्द्रमासिंह ! आई गयो ?

चन्द्रमा हाँ आय गयन।

ठेकेदार खूब पईसा कमायव। आखिर गयो कहाँ रहा ?

चन्द्रमा सहर।

[ठेके मे मौजूद सभी लोग उसे आदर और कौतूहल से देख रहे हैं। आज कोई उसका मजाक नहीं उड़ा रहा। चन्द्रमा शराब लेकर एक ओर आ बैठता है। कई लोग उसे घेर लेते हैं। वे लोग 'राम राम चन्द्रमा भइया' बोलते हैं।]

एक कब लउट्यो सहर से भईया?

चन्द्रमा बस अभहियें चले आइत हन।

दूसरा खूब ठाट बाट है। कउन काम करत रहेयो सहर मा ?

चन्द्रमा बड़े हाकिम के घर नौकरी करित रहन।

सारे लोग आश्चर्य से
कलट्टर के हिंया !

चन्द्रमा अउर का, अपनै बिरादरी के रहैं।

तीसरा लागत है खूब माल बनाय कै लाये हो ?

चन्द्रमा अउर नाही तो का, माल मत्ता तो लेई आय है।

पहला तो खूब रौउनक रही सहर मा !

तीसरा तो बडे हाकिम के हियां रौउनका नाही होत ? अरे हुआं तो कुत्तो मलाई खात है।

[सभी शराबी गम्भीरता से हामी भरते हैं।]

चन्द्रमा हां खूब मजा किया।

दूसरा सो तो दिखतै हो।

चन्द्रमा लेकिन ई बताय देई, ऊ सार हाकिम रहा बहुत हरामी !

[लोगों मे खुसर-फुसर शुरू हो जाती है।]

हमार तो कुछु दिनै मे जी उकताय गवा।

[अब उसे थोडी थोडी चढने लगी है]

सच्च कहित हैं, बहुत हरामजादा है। तू लोग तो सोच नाही सकत हो लेकिन हम जानित हैं। हम देखा है उहका। इतना पईसा, रुतबा-दाब, रोजाना मोटर मा भरि भरि के भेंट-पूजा आवत रहा। लेकिन ऊ ससुरा बईसनै कजूस। मजाल है केउ कउनो चीज कै हाथ लगाइ। नौकरन के तो कउनो इज्जत नाही, जब देखो तब फटकार, दुतकार गाली। जरा-सा कउनो गलती होई जाय तो हण्टर लईके पिल जात रहा। हमसे नहीं बरदास भवा। आखिर एक जमाना रहा जब हमहु कुछु रहन। हम छोडि दिया ऊकर नौकरी बस छोडि दिया।

[लोगो मे और खुसर-फुसर होती है।]

लेकिन एक बात अउर बताई। ये सुकुल महाराज का लरिका ससुर फिरंगिन की अउलाद, बहुत समझत है अपने को। अउर ऊ बाबू के कुंअर उहो खूब गिटपिट गिटपिट करे है। अरे सहर मा इनहु से अच्छा इंगरेजी पढ़े लोग हैं। डाक्टर तो हुआं एक मिनट मा फेंक सरक जाई। पर कुछो कहो, हमका हुआं केर खाना नाही पसन्द आवा। एकदम बेसवाद। सब्जी मा

छोंक तो ससुर लगउतै नाहीं। अउर रोटी इतना पातर की हमार ससुर पेटै नाहीं भरत रहा। भात घर तो चलन नाहीं। कबहुँ वार-त्योहार थोड़े सा पकाय लिहिन, नाहीं तो बस रोटी। हाकिम केर मेमसाहब सब्जी म थोड़ा घी डारी देव तो एकदम गरमाय जाय ! कहत रहीं हम मोटा होई जायेंग। घी नुकसान करत है मत डारा करो। अब त्यो, घी ससुर भाव नुकसान करी!

[वहाँ जमा लोग हँसने लगते हैं।]

एक लेकिन ऊ मेमसाहब देखे मा कइसन रही? जरूर खूब सुन्दर होई?

दूसरा अउर का, सहर केर अउरतन केरि बातै कुछ अउर है! बिल्कुल बाईसकोप कर पतुरिया के नाइ!

चन्द्रमा अरे छोड़ब भइया! सहर मा अउरतैं कहाँ होती हैं, ससुरी सब जनखा होत हैं जनखा। अउरतन अउर मरदन मे कउनो फरकै नाही है। खटर खटर फोज्जी कवायद करत चलत हैं। न कमर मटकहियैं न कूल्हा।

[सब लोग हँसते हैं।]

अच्छा एक बात बताव, करान्तकारी कउन होत है?

तीसरा करान्तकारी? गाँधी केर चेरन का नाही कहत हैं?

चन्द्रमा घत्त ससुर, अर ऊ तो सत्याग्रही रहें। अउर तू फिर कउन जमाना के बात करत हो, अब कहाँ रहि गये गाँधी केर चेला!

दूसरा तो कउन होत है करान्तकारी?

चन्द्रमा बहुत खतरनाक आदमी होत है। सरकार उनका एकदमै फाँसी चढ़ाय देत है। बड़ा हाकिम घर केर सब दरवाजा खिरकी बन्द कईके सोवत रहा। चारो तरफ पुलिस कर गारद पहरा देत रहत रही, तवहुँ करान्तकारी केर डर बना रहा। तनिक खटका हुआ नाही कि ससुरै केर जान निकस जात रही।

पहला इ नाई होई सकत, हाकिम का कउन डर?

तीसरा तुम ठीक कहत हो, हाकिम का कउनो डर नाही होत।

चन्द्रमा चिढ़ाते हुए

तुम ठीक कहत हो! अरे करान्तकारी जिन होत हैं, एक छोटे-से छेदों मे भीतर घुस जात हैं। तब ना ऐतना बाधा है उनकर, कुछ जानत तो हो नाहीं। लेकिन तमासा देखेवाला होत रहा।

कई दफा हाकिम के घरे पै अदालत बैठत रहै। बहुत मजा आव। करान्तकारियन को बाधके लावा जाय। एक पीछे दस पुलिस वाले, सबन के हाथ मा बन्दूक, लेकिन करान्तकारिन का कउनो डर नाही हाकिमो के सामने जोर से चिल्लावा करें—'इनकिलाब जिन्दाबाद !'

[अचानक चन्द्रमा, कालू मुच्छड, जो आगे झुका बात सुन रहा था, की गरदन जोर से दबोच लेता है। कालू सकपका जाता है। चीख मारकर वहाँ से तीर की तरह भाग छूटता है। दूसरे लोग भी दहशत मे आ जाते हैं। चन्द्रमा खिलखिलाकर हँस पड़ता है।]

चन्द्रमा ऊ लोग गीत गात आवत रह, जइसी से गुजरे, खूब मजमा लग जात रहा। गाना भी खूब मजेदार।

गाता है

कइस सुधरी कइसे सुधरी
जिनकर बिगडलवा चलनिया कइसे सुधरी
रात-दिन बेगार कराव
मारे पीटे और डरावै
रमनी के इज्जत पर हरदम
ऊ राखे ला आँख
देख लो धनिकन के सतनियाँ कइसे सुधरी
कइस सुधरी हो रामा कइस सुधरी

[चन्द्रमा मस्त होकर गा रहा है। ठकेदार और दूसरा निलगा आपस म कुछ खुसर-पुसर करते हैं।]

दूसरा बहुत खूब ! हमरै गाना बदल दिहिन हैं। लेकिन बात अच्छी कहिन, देख ली धनिकन के सतनियाँ !

[सब लोग हँसत हैं।]

चन्द्रमा नाहिन भय्या ई करान्तकारी होत खतरनाक हैं। आसपास के गाँवन मा खूब बवाल मचाये रहे हैं। अच्छे-अच्छे जमीन्दार मालिक-मलिकान डरात हैं उनसे। तबहि न सरकार उनका सीधे फाँसी देत है। अब तो सबही गाँवन मा करान्तकारियन का बाधा होई गयी है। हर तरफ खूब मिसटरी गारद लागि है—पर करान्तकारी काबू नाहीं आवत।

दूसरा अरे जिन्नो भूत कबहूँ बस मा आवत है !

चन्द्रमा लेकिन जउन होय, एक दिनतौ गजब केर मजा भवा ! पुलिस एक ऊंचे और हट्टा-कट्टा करान्तकारी का हथकडी-बेडी डारिके लै आयी। ऊ इतनी जोर से चिल्लावा 'नच्छत्तरबारी जिन्नाबाद' कि भईया, बडे हाकिम केर पतलूनै गीली होई गई। अदालत छोडि के सीधै अन्दर भाग गवा। मेमसाहब जब दुई पियाली इगरेजी शराब पीय के दिहिन तब कहू ईह लाइक भयो कि वापस अदालत मा जाय्के बइठैं। हमका उहू दिन बहुत मजा आवा। सार, हमका ईतना दुल्कारत रहा जइसे हम ओकर पिल्ला होई, लेकिन ऊ दिन पू सरिकि गयी ससुरे की।

तीन भइया, इ नच्छत्तरबारी का होत है ?

चन्द्रमा अल्यो, तुमका नच्छत्तरबारी नाही मालूम अरे नच्छत्तर नाही होत ! जसे मगल, बुध ! नच्छत्तरबारी आसमान म सबसे ऊपर जगमगात है। तबही न क्रान्तिकारी ऊकर जय बोलत है।

[सारे लोग हा मे सिर हिलाते हैं।]

ठेकेदार पास आकर

अच्छा चन्दरिमा भइया, इ ता बताओ, सहर स कउन कउन सामान लेई आय हौ ? जाकिट तौ बहुत बढिया पहिरे हौ। हमरौ लिए कुछु लाय हो ?

चन्द्रमा देखौ है न असल ब्योपारी ! लाय हन। खूब सारी चीज लाय हन। बिलायती छीट, रेसमी लहँगा ! अउर भी तमाम समान है, जेका चाही लई जाई। मुला पइसा नकद लेई।

[एक बूढा शराबी जो अभी तक दूर बठा बातें सुन रहा था, चन्द्रमा के नजदीक आ जाता है।]

बूढा चमकू, भइया चन्दीरमा, हमहु का एक रेसमी लहगा दिखाय हौ ? हमार छुटकी मेहरारू बवाल किये है। ऊका रेसमी लहगा चाही। अब हमार सहर जाबव तो हात नाही।

चन्द्रमा हाँ-हाँ, काहे नाही असल रेसमी छीट है। मेहरारू देखी तौ फडक जाई। खुस कर देय है तुमका।

[बुधवा, जो अभी तक एक कोने मे दुबका बैठा था, उठकर चन्द्रमा के पास आ जाता है।]

बुधवा चन्द्रमा भइया, बात सुनिहो ?

चन्द्रमा काहे वे ?

बुधवा सहमकर हिम्मत बटोरते हुए
तनिक एहर आवो

[उसकी दीनता चन्द्रमा को पिघला देती है। वह मुस्करा देता है।]

चन्द्रमा अल्यो ससर बुधवो हमका बुलावत है।
उठकर पास जाते हुए
हाँ बोलोऽ

बुधवा भइया एक लहगा हमहूँ का चाही।

चन्द्रमा काह वे त का करिब ? नचि है ओका पहिर के। जनखा सार !

बुधवा नाही ऊ केहु के लिए चाही।

चन्द्रमा अच्छा तो चीटीऽ क पर निकरि आय हैं। खरात बाँटे क खातिर नाही है। बहुत मँहगा है।

[बुधवा टेंट से पोटली निकालता है।]

बुधवा बहुत पैइसा जमा किया है जितना होई लई लिहो।

[चन्द्रमा एकाएक उसके बाल पकड़ लेता है। उसका चेहरा तमतमा गया है, लेकिन बुधवा कोई प्रतिरोध नही करता। दीन भाव से उसे देखता रहता है। चन्द्रमा का गुस्सा ठण्डा पड़ जाता है।]

चन्द्रमा ससुर पईसा दिखावत है। आय जाव, दई देब।

बुधवा अबही नाहो दई सकत हो ? हम आ से मिल जाईत हन, अब ही द देब तो खुस होई जाइ।

चन्द्रमा देखो तो ससुर का चल, तू हों का याद राखिहो अभीहें लई जाब।

[चलने लगता है पर वह बुरी तरह लड़खड़ा रहा है। बुधवा उसे सहारा देता है। चन्द्रमा अपनी बाँह उसके गले म डाल देता है।]

बूढा अरे चन्दरमा भइया जात हौ ? हमहू चली, दिखाद हौ लहगा ?

चन्द्रमा नाय, तुम काल्ह आयौ।

[बुधवा को देखकर मुस्कराता है और मौज मे एक गीत गाता बाहर निकल जाता है।]

अधकार

दृश्य । 13

[बाबू दीनानाथ का मकान। बरामदे मे उनका पूरा परिवार बेसब्री स चन्द्रमा का इन्तजार कर रहा है।]

लड़का आजकल उसका दिमाग कुछ ज्यादा ही चढ़ गया है। किसी की परवाह ही नहीं करता।

बाबू साहब सब बदल गवा है कुंवर! अउर फिर छोटे आदमी क हाथ मा पईसा लागी जात है तो आपन बस में नाही रह जात।

लड़का आपने उसे बुला भेजा है, इससे उसका दिमाग और खराब होगा। वैसे भी मुझे तो दाल म कुछ काला लगता है। उसके पास इतना सामान आया कहाँ से?

बाबू साहब तुम ठीक कहत हो कुंवर! सन्देह हमहू का है। आह कर चाल चलन ठीक नाही लागत है। हम लोगन का हुसियार रहै का चाही।

बीवी मुला अबही तक आवा काहे नाही?

बहू हमका लागत है, गोविन्दा केर महरारू ने आका साथ का कवनो ज्यादा जोर नाही डारिस होई।

लड़का हो सकता है, वो आने लायक हालत म ही न हो। आजकल सुबह स ही पीना शुरू कर देता है।

बाबू साहब ख्याल रखै का चाही घर कर सब दरवज्जा, खिड़की बन्द रखै का चाही, ओकर कउनो भरोसा नाही है।

बीवी ऊ पशमीना केर साल कहू बन न दिहिस होय? मुकुलाईन का भी पसन्द आय गवा रहा।

बहू उन्हें लोग डर मारा समान धरीन्हि है वहम। गोविन्द कर मेहरारू बतावत रही कि बिलाइती रसम कर दुई थान धरीन्हि है।

बीवी बाबू साहब से
अइसा तो कहूँ नाही कि तुम आव का मना किये रहे, एही से ओकर हियाँ आवँ के हिम्मत न पड़त होय।

बाबू साहब ऊ अई है। तू काहे फिकिर करति हो। आज हम खुदही बुलावा है ओहका।

[तभी गोविन्दा की बीवी हाफती हुई अन्दर घुसती है। पीछे चन्द्रमा है।]

गोविन्दा की बीवी ई बार-बार कहन रहा, हमरे पास कुछो बाकी नाही रहि गवा। हम कहन, ई सब तुम खुदै चल कै बताय देव, तबहू मना करत रहा, हम कहिन की

[चन्द्रमा की निगाहें इधर उधर फूला को खोज रही हैं, जो वहा नहो है। वो उदास हो जाता है।]

बाबू साहब हम सुना है, तुम सहर जायकै बहुत पईसेवाले होई गयो हो। बहुत अच्छी बात है। वईस भी तुम बहुत मेहनती हो, भले आदमी हो, सहर मा अइसे लोगन की बहुत पूछ होत है। कौनो ताज्जुब नाही कि तुम पइसा कमाय ।
क्षण भर रुककर
अब लोग कहत है, तोहरे पास कुछ पुरान सुरान चीजें हैं ऊ सब हिया लइ आव जे स हमहू देख सकी हमहूँ ओहमा से कुछु लेका चाहित है

चन्द्रमा गोविन्दा केर महरारू का हम बताई चुकेन हैं कि हमरे पास अब कुछ नाही बचा।

बीवी बहुत निराशा से
कुछो बाकी नाही बचा ?

बाबू साहब ई सब चीज एतना जल्दी कईसे खतम होय गयी ?

चन्द्रमा ऊ दरअसल बहुत तो रहा नाही थोड़ै सा समान रहा, सब लोग खरीदि लिहिन।

बाबू साहब अरे कुछु न कुछु तो बचै होई ?

चन्द्रमा खाली दरवाजा केर एक परदा रहि गवा है।

बीवी तो दरवाजे केर परदै लई आव, हम देखैं के चाहित हन।

बाबू साहब ऊ तुम काल्हो लाई सकत हो। लेकिन आग फिर कउनो चीज

आवै तो हमका पहिले दिखाई दिहो

लड़का हम तुम्हे औरों से कम पैसा नही देंगे।

बीवी हमका तो एक पसमीना केर साल चाही।

बहू अउर हमका एक बिलायती छींट केर जम्पर।

चन्द्रमा अच्छा मलकिन !

[लापरवाही से बाहर निकल जाता है। उसकी लापरवाही से बाबू साहब का परिवार चिन्तित हो उठता है। बाबू साहब की नीद उड़ जाती है।]

लड़का देखा आपने बाबूजी, कैसी बेफिक्री आ गयी है इसमे। तमीज़ तो बिल्कुल रह ही नही गयी है।

बीवी हमका तो नाहो लागत कि ऊ हमरे बात के कउनो धियान दिहिस होय।

बहू पता नहो ऊ परदौ लाई कि नाही।

[बाबू साहब चिन्तित बरामदे का चक्कर लगाने लगते हैं।]

लड़का ऐसी कछुए की औलाद से सम्हलकर रहना चाहिए। अच्छा तो यह होगा कि पुजना से कहकर इसके यहाँ रहने पर ही पाबन्दी लगा दी जाय।

बाबू साहब नाही, ओहसे फालतू मा छेड़खानी करब ठीक नाही है। अगर ऊ बदला लेवे पे उतारू हाई जाई ता अच्छा नाही होइ। वइस भी चील अपन घोंसला मा सिकार नाही करत।

लड़का आप ठीक कहते हैं, ऐसे लोगो से दुश्मनी भी ठीक नहीं है।

बाबू साहब चमकू से गाववालन का कउनो खतरा नाई होय के चाही हा रात मे बखत हुसियार रहे क पड़ी।

लड़का गोविन्दा की बीवी से

ये सारी बातें तुम किसी को बताना मत।

बाबू साहब हाँ रे चमकुआ तक ई बात नाही पहुचे क चाही।

बीवी सुन लिह र, तोरे पेट मा बात मुसकिलै से पचत है।

गोविन्दा की बीवी अल्यो, हम काहू केहु से बताव लागी।

बाबू साहब अच्छा अब बहुत देर होई गवा, दिया बुझाई देव। देहरी-दरवाजा ठीक से देख लिहो।

[अन्दर जाता है।]

अन्धकार

दृश्य 14

[मन्दिर मे चन्द्रमा की कोठरी। चन्द्रमा सोया पडा है। पूजन अन्दर आता है।]

पूजन चमकूआ, अबे ओय उठाईगिरा हरामजादा ! तू समझत हौ हमका कुछु पतै नाही चलत है। सहर मा कउन-कउन गुल खिलाऔ ? बडा धन्ना सेठ बना फिरत हौ, चोट्टा ससुर ! अबे खुद तो अन्दर जइबे करिहौ, साथ मे गाँव केर चार सरीफ लोगनौ का फसइबै। मबका ससुर चोरी केर माल बेचत फिरत हौ।

[उसे लकडी से कोचता है। चन्द्रमा उठकर बैठ जाता है और जोर की जम्हाई लेता है। पूजन खोजती निगाहा से कोठरी म कुछ ढूढ रहा है]

पूजन सार परेसान करक रख दिहिस, जरूर गाव पर तोहरे वजह से कोनो आफत आई एक दिन। अबे कहा छिपाय रखे हो सारा माल ? कहुँ गडहा खोद के दबाय दिहो या बुढऊ पुजारी के हियाँ धर आये हो, ऊह हरामजादा केर भी मिली भगत है।

चन्द्रमा अब कुछौ नाही बचा, सब खतम होई गवा।

पूजन हरामी केर पिल्ला, गरीब समझ के रहम करित हैं तौ सरै पे चढत जात हौ। ससुर चमडी उधेड देब तोहार !

[एक डण्डा लगाता है। चन्द्रमा उछलकर एक कोने मे चला जाता है]

बोल कहाँ छिपाय रखा है ?

[उसकी गुदडी और तमाम चीजें उलटता-पुलटता है, तो उसे दरवाजे का परदा मिल जाता है।]

पूजन ई काहे वे ?

चन्द्रमा दरवाज कर परदा। ईका लइ नाही जायव, बाबू साहव देखे के खातिर मगाइन है।

पूजन अब बाबू साहब का बीच मे लावत हो ससुर ? ऊ चार उठाईगिरा स सामान खरिन्हि ? झूठा सार !

[परदा ठीक स तह करके बगल म दबा लता है। फिर कुछ नर्मी के साथ]

अच्छा अब सच्चे-सच्चे बोलिदया बाकी सामान कहा है ?

चन्द्रमा बताएन तो अब कुछो नाही बचा।

पूजन तोहरे चक्कर मा हमरे सरीफ लोगो मारे जइ, एही खातिर छोड देहत हन। लेकिन ससुर तोहार खबर फिर कबहुँ लेब !

[तभी तीन निलग अन्दर घुसत हैं]

पहला का भवा चौकीदार ? सुबहे-सुबहे काह चमकू प बरसत हो कुछु हाथ नाही लाग का ?

दूसरा अरे पूजन चौकीदार कहुँ खाली हाथ लउट जाये, ई नाही हो सकत, होई नाही सकत।

तीसरा अउर फिर चमकू ता सहर से खूब कमाय के लावा है। चौकीदार के हिस्सा तो अलग रक्खें होई।

पूजन तुम लोग हियाँ का लने आय हा ? हरामजादो, सच्चे सच्च बताव का खिचडा पकत है हियन ? ई ना समझेव, तू लोग हमरे आँख मा धूल झोक लेहा।

दूसरा अरे नाही चउकीदार, चील के र आख मा धूल उछालब तो अपने आँख मा पडी।

[व सब हँसते है]

पूजन चुप वे लफगा सच-सच बताई दब, का लब आये रह्यो हियाँ !

पहला अब आप क खाना तलासी के बाद बचा का है जा हम पउबै।

तीसरा हम पचे तो अइसव चमकू कर हालचाल पूछे क लिए आईग रहन। सहर मा बडे हाकिम के हिया नउकरी करिके लउटत हैं ना, बहुत किस्सा हाई हैं एकरे पास सुनाव के खातिर।

दूसरा अउर बहुत गुर बतावै के।

पहला तुमहु थोडी देर बइठ लब। साइद दुई-तीन गुर तुम्हरो काम

केर निकरि आवैं।

पूजन चुप बे पिल्लो, हम तुम सबका काला पानी ना(?) भेजा ससुर तो हम गाव छोड देव। बहुत फसाद मचाय हो।

[जान लगता है]

चन्द्रमा ऊ—ऊ—परदा तो—बाबू—साहेब—।

पूजन चुप बे, बाबू साहेब के नाम जुबान पै नाही लायेब। खाम खा सरीफ आदमी पै कीचड़ उछालत हो।

[पूजन चला जाता है। तीनों तिलगे हँसते हैं]

पहला का रे चमकुआ बहुत बातैं सुने का मिलती हैं। का ई सच है

चन्द्रमा कस बात—लोगन का कुछ बात तो करहैं का चाही।

तीसरा अरे नाही भाईं, सब गाँव मा सोर है। कउनो न कउनो बात तो होइबै करी।

चन्द्रमा कइसन बात ?

दूसरा लोग कहत हैं सहर मा तोहार साथ कउनो बडा गिरोह से रहा। ऊ लोग हाथ साफ करै मा बहुत माहिर है।

चन्द्रमा एकदम झूठ।

पहला झूठ नाही होई सकत। ई जौन इतना सामान तुम लई आये हौ ऊ हाकिम के हिंया नौकरी करि के तौ मिल नाही सकत ? अउर फिर तुम सदा केर बरमचारी ई भला सहँगा कहिके ढोवै लाग्यो ? अउर भी किसम किसम केर नवी पुरान चीजें।

तीसरा अउर तोहार इरादा कउनो बिसाती केर दुकान खोल का तो रहा नाही ?

चन्द्रमा गव से

हाँ तुम ठीक कहत हो। लेकिन कउनो गिरोह बिरोह नाही रहा। हाकिम केर नउकरी छोडे के बाद अईस हैं एक दिन ठेका पै एक आदमी से मुलाकात होई गई। ओकर नाव रहा किसना। नवा नवा सहर मा आवा रहा कउनो साथी केर तलास रही। ऊ हमका अपने साथ आवै के कहिस। बस, हम ओकरे साथ मिल क छोट मोट चोरी करे लागें, बस इतनै।

दूसरा तुम पूरी बात नाही बताय, तुम्हारे पास जउन सामान रहा, सब अमीर घरन का रहा। सहर मा तो लोग बहुत चौकस रहत हैं, फिर अमीर घरन मा पहरा, नउकर चाकर सब होत

है। कउनो छोट मोट चोर केर मजाल कि उनके घर मा घुस जाय।

पहला देख रे चमकुआ, वन मत सच्च सच्चै बताय देयो मामला का है?

तीसरा हम लोग भी तोहरे साथ आय जाइब तुमका मदद रही।

चन्द्रमा नाईं भैइया नाईं, हम ई धन्धा नाही कर सक्तेन, किसना चोर हमका दिवार फाद अउर खिडकी माही अन्दर घुस क बिद्या सिखाव के चाही बहुत बार हम तइयारौ भयन पर आखिर बखत मा हिम्मत टूटि गयी। हम तो बस दरवाजा और खिडकी के पास खडा होईके माल बटोरित रहिन, भीतर तो किसनै घुसा करत रहा।

दूसरा तुम सच कहत हौ?

पहला फिर एतना माल ताहरे हाथ कहाँ से लागि गवा?

तीसरा देखो चमकू, वइसन छोट मोट चोरी हमहु किया है। कबहु एक-दुई के साथ मा कबहु अकले। लकिन आज तक अइसन माल हाथ नाही लाग।

चन्द्रमा अरे तुम लोग बातैं नाही मानते हो। ऊ मौका की बात रही, गनीमत रहा कि हम बचि गयन। ऊ दिन किसना बजाजी के बडा बिशुपारी के घर मा हाथ साफ करेका कहिस, हम बहुत मना किया। कहा, अमीरन के लूटै के हैसियत नाही हमार मार डारा जइवे। पर किसना ससुर मनब नाही किहिस। ओहका तो लालच सवार भवा रहा बडा हाथ साफ करै के चाहत रहा। हमका पिछवाडे केर खिडकी क नीचे खडा करि दिहिस अउर अपने गटर के पाइप क राहा ऊपर खिडकी से भीतर कूदि गवा। सार एकदम छिपकली रहा। थोडी देर मा एक बडी-सी गठरी नीचे फेंकिस अउर फिर अन्दर चला गवा। तब्बै घर मा सोर मचा चोर-चोर! पकडो पकडो! हमार तो फूकि सरक गवा। गठरी लई दई के अइसन भागिन की दुबारा पीछैं मुडिकै नाही देखा। सहर से जब दूर निकरि आये तब्बै दम लिया अउर सीधइ गाँव आई गवा।

पहला धत्त ससुर, हम कहित रहे, ई तिल मा तेल कहाँ, बिल्ली केर भाग स छीका टूटा रहा, नाही तो ई चूहा ससुर कउन लाइक है।

तीसरा ससुर खोदा पहाड और निकरी चूहिया।

दूसरा आय बे चमकुआ, गाँव मा जादा ईतरात न फिरो, ना ही तो मुहा कैर भरता बनाई देव।

चन्द्रमा अरे ई कउन बात भई ? तू तू—

दूसरा अबे चुप। चूहा ससुर !

तीसरा सार माथा पै लट्टू जराय घूमत है।

चन्द्रमा देखो देखो फिर ई बात न करोव।

[तीनो हँसते हुए चले जाते हैं। चन्द्रमा कुछ देर औचक उन्हें जाते देखता है। फिर धीरे से फिस्स करके हँस पड़ता है]

चन्द्रमा हूँ ससुरे तिलगे।

अन्धकार

दृश्य : 15

[सुबह सुबह का वक्त। चाय की दुकान पर बहुत से जमा हैं। उनमें खुसर-फुसर चल रही है। वातावरण बहुत तनावपूर्ण और सहमा हुआ है।]

पूजन इहसे हमरो गाँव पर आफत आय जाई। बाबू साहब ई ठीक नाही किहिन।

गाँववाला लेकिन हम सुना है ऊई लोग मुँह अंधेरे वापिस लउटि गये।

दूसरा हाँ हमार मेहरारू सुबहिये जब जंगल जात रही तो दुई लठतन के साथ कोहू का 'आयर' फसी जात देखिस रही।

पूजन अरे गोबिन्दा केर मेहरारू आपन आँख से रात मा ऊका बाबू साहब केर घर मा घुसत दखिस रहा अउर ऊँ गंगाजली उठाय कै कहेका मइयार है की उई लाग अब ही तक बाहर नाही निकरे है। रात भर बाबू साहब के घर मा खुसर फुसर होति रही।

तीसरा लेकिन बाबू साहब का अइसन नाही करके चाहो, इहसे ऊ खुदौ मुसीबत म पडिहे अउर गाँवौ प आफत आय जहि। नछतर लोगन से दुसमनी ठीक नाही है।

पूजन ई तो पक्का होई गवा कि ऊ रहे तो आयर के जमीन्दार बाबू बिसनाथ सिंह। आयर मा लाल सेना के हल्ला स बचक भागे रह।

चौथा सुना दुई भारी भारी सन्दूको उनके साथ रहा।

पहला माल मत्ता रहा होई।

दूसरा लकिन बाबू साहिब के पास काहे आये। पहिले तो कबहु उनका इकबारो मा देखा नाही? न बाबुए साहब का कबहु आयर जायें का भवा।

पूजन हम तहकीकात किया है । मलकिन की तरफ से, बिसनाथसिंह बाबू साहेब के रिस्तेदार है । अउर अब आड़े बखत उनका 'इकबारी' मा ही ठउर मिल सकत रहा । खबर तो इहो है कि आस-पास के सब गावन मा लाल सेना के जोर है । सहर जावे के सब रास्ता बंद कर दिहिन है । पुलस-मिलटरी के साथ खूब लड़ाई हुई रही है । बिसनाथ सिंह के नाव लाल सेना केर बारंट है । ऊई लोग उनके पीछे लगि हैं ।

तीसरा पुजना भईया बिसनाथ बाबू का इकबारी आना ठीक नाही भवा । आस-पास के गाव मा इकबारियै हो अब बचा है ।

[तभी बाबू साहब हाथ में छड़ी लिये आते हैं । लोग चुप हो जाते हैं । कुछ उन्हें नमस्कार करते हैं, लेकिन बहुत उत्साह उनमें नहीं है ।]

बाबू साहब अरे पुजना सुनबे रे !

पूजन जी बाबू साहेब !

[भीड़ से निकलकर आगे आता है । बाबू साहब उसके कंधे पर हाथ रखकर अलग ले जाते हैं ।]

बाबू साहब ई गाँव मा मुह अँधेरे केकर आवै के बात है, कुछु खबर लागि ?

पूजन सुनति हैं, आयर के जमीदार बिसनाथ सिंह रहे । लाल सेना का जब आयर पे कब्जा जमा तो छिपत छिपावत दुई लठैतन के साथ हिया पहुचे, एतना खबर तो पक्का है । लेकिन ई पता नाही लग पावा है कि अबहि गाव मा हैं या लउट गये ।

बाबू साहब गाव मा ऊ किकरे हिया आये रहे कुछु खबर है ?

पूजन ईहै तो पता नाही पावा, लोग अइसेहि अटकल लगाई रह हैं । लेकिन बाबू साहिब, बिसनाथ बाबू का गाव मा रहिब ठीक नाही है । नकसल लोग उनके खिलाफ बारन्ट निकास दिहिन है, उनके रहत हम लोगनों पर मुसीबत आय सकत है ।

बाबू साहब हमका तो कुछु पता है नाही, हमहु बस सुनवै किया है । हमरे हिया तो देख सकत हो, न कोऊ आवा न कोऊ गवा ।

पूजन हा, हम लोगन से कहा, बाबू साहब जइसन समझदार आदमी अइसन नाजुक बखत कउनो खतरा मोल नाही ले हैं । अब लोग अटकल लगावैं तो का कीन जाय सकत है ।

बाबू साहब नाही-नाही, ई तरह के बात नाही होवे का चाही । हम तुमका

ठीक बताईत हन, अब गाँव मा कोऊ नाही है तुम लोगन का समझाव, अईसन वईसन बात न करैं।

पूजन हा बाबू साहेब !

बाबू साहब अउर बताओ का खबर है ?

पूजन हालात अच्छे नाही हैं बाबू साहेब ! सहर केर रस्ता अबहूँ खुला नाही है। सब मदद केर रास्ता बद होई गवा है। लाल सेना केर कदम बढते आत है। आयर तक आय पहुँचे हैं।

बाबू साहब ससुर ई सरकार एकदम बेकार है। मुट्ठी-भर नकसलियैं उनमे नाही सम्हरत। सार जीना दुसवार किये हैं। अब बताओ, बिसनाथ बाबू जैइसे सरीफ लोगन का भी रात बिरात छिपत छिपावत भागै का पडत है। ससुर ई कउनो बात है।

धीरे से

'इधवारी' मा तो कउनो नकसलिया या उनका हमदद नाही है ?

पूजन याको ता कउनो खास बात नजर नाही आवत, बस चमकुए केर भरोसा नाही। जब स सहर से आवा है, ओकर चाल चलन ठीक नाही लागत। काल्ह रात ठेका पँ पीक आपका और मुकुल बाबू का गरियावत रहा। कहत रहा करान्तीकारी आवत है, विन्गोह हुई है बिदरोह।

बाबू साहब काव मुसीबत है ?

कुछ रुककर

काव कहत है तू। आजै कराय दई ओकर तीहा पाँचा।

पूजन अरे नाही बाबू साहब, बिल्कुल नाहीं। बखत अच्छा नाही है। लेव क देवे पडि सकत है। जादा दिन अइसन नाही चली। एक बार मामला सान्त होई जाय तब एकर इन्तजाम कर देब।

बाबू साहब देखो पूजन, जरा चउकस रहो।

पूजन हाँ बाबू साहेब !

बाबू साहब वइसे अपने तरफ से पूरी तइयारी हम कर लीथ हैं।

कुछ देर रुककर

अच्छा पुजना तुमसे एक बात अउर करैं का है। सुना है मुकुल मेहराज के लडका का नकसलियो के बीच उठब-बैठब है। कालिज के जमाना मा उनकर सगत किहिस है ?

पूजन थाने से ओकर पर निगरानी का हुकुम तो है, लेकिन कउनो खास बात देखे मा नाही आई। उनकर तो कउनो जादा आवें

जाय के भी नाही होत है। ऊ तो बस दिन-भर किताबैं पढा करत है।

बाबू साहब अरे किताबैं तो सब गडबड किहिन है।
पुजना का कहत हे रे। हमका सुकुल मेहराज से मिल नाही लेकै चाही एक दफा। ई ठीक है आपस मा कुछु मन मुटाव रहा है, लेकिन ई मुसकिल मा एक-दूसरे के काम तो आवैं के ही है।

पूजन आप तो हमरे मुह केर बात छीन लिहो बाबू साहब ! गाँव मा आप अउर सुकुल महाराज, दुइये तो आदमी हैं जेकर कुछ असर रसूख है। अइसे बखत मा आप दोनो का एका जरूरी है।

बाबू साहब ठीक बात कहत हा, तो हम जाईत हैं उनके हिया। तुम एहर मैं खयाल रखो। हमका लइके गाँव मा कउनो अईसन-वईसन बात नाही हावैं के चाही।

पूजन अरे नाही, बाबू साहब, बिल्कुल नाही।

बाबू साहब अउर ऊ चमकुओ पै नजर रक्खयो।

पूजन जी बाबू साहेब !

[बाबू साहब चले जाते हैं। पूजन चाय की दुकान पर वापस लौट आता है।]

पूजन हम पूछि लिया। बिसनाथ सिंह बाबू साहिब से मिले ही नाही है, रिस्तदारी के बात भी झूठ है।

दूसरा लेकिन बाबू साहब तो औरो बहुत बात करत रहे। अउर काव कहत रहे ?

पूजन काव कहो ? सबै बउखलाय गये हैं। हम उनसे कहा की जायके सुकुल महराज से मिले त्यो। अइसे बखत मा आप लोगन का एका जरूरी है।

दूसरा काव बात करत हो, बाबू साहेब अउर सुकुल महाराज से मिलैं। बरसो होई गये बोलचाल बन्द भये।

पूजन अरे भईया, उलटा बखत जउन कराय थोडा है। बइसे ही जब घर मा आफत आय तो आपसी बैर भाव भूल जाइब अच्छा। पहिले तो मनत नाही रहें। जब समझावा तब गये हैं सुकुल महाराज से मिलैं।

चार कमाल है पुजना भइया, नीति के मामला मा तुम्हरा कौनो जवाब नाही।

ठेकेदार हाँ ! तुमका ई चउकीदारी छोडिके इलिकसन मा खडे होई जायें चाही।

पूजन अरे लानत भेजौ ससुरी नेतागिरी पै। हम तो ई पुलिस की नउकरीयै से तग आई गये। काय करी, मजबूरी है। बीवी बच्चन का पालै पोसे का है, नाहीं तो सब छोड छाड के निकर जाईत कहूँ जगल मा।

[तभी चन्द्रमा दाखिल होता है। सभी लोग सहसा चुप हो जाते हैं जडवत। चन्द्रमा पहले कुछ सकपकाता है, फिर फिस्स करके हँस पडता है।]

पूजन अरे भईया चमकू !

[चन्द्रमा कोई जवाब नही देता। उसे लाल आँखों से घूरता है।]

का चन्दिरमा ठाकुर बहुत जोस मे हो। आ चाय पी लेव तनिक।

चन्द्रमा एकदम चीखकर

चौप्प बेल्लदो फल। एक एक का देख लेब, एक-एक का समझ लेव, विदरोह हुई है विदरोह।

[पूजन सहित सभी लोग दहशत मे आ जाते हैं। चन्द्रमा सीना फुलाये आगे बढ जाता है। अब वो 'कैसे सुधरी रामा कइसे सुधरी' गाना गा रहा है। गाते हुए सुकुल साहब के घर के सामने से निकलता है। सुकुल साहब बाहर खडे दीना बाबू से बात कर रहे हैं।]

सुकुल बाबू साहेब, आप बात तो ठीकै कहत हो, लेकिन वखत बुरा आई गवा है। दाहिन हाथ का बाँये हाथ पर विसवास नही रहा। अईस म बेटा बाप की कउन कहे। हम हमेशा उनका फटकारित रहै कई महीना से तो बातोचीत बन्द है। हमका तो डर है, ई ससा भी विभीषण ही न ढाय।

[चन्द्रमा अपनी मस्ती मे गाता चला जा रहा है—देख ली धनकिन के सैतनियाँ—]

सुकुल अरे यार चन्दिरमा !

[चन्द्रमा नही सुनता। गाता हुआ आगे बढ़ता है।]

अरे ओय चन्दिरमा बाबू !

[चन्द्रमा को यकीन नही होता कि उसको आवाज दी गयी है। वो ध्यान नही देता, तब दीना बाबू फिर आवाज देते हैं]

बाबू साहब अरे भया चमकू !

[चन्द्रमा रुकता है, लेकिन वापस नहीं लौटता । वहीं से कहता है—]

चन्द्रमा कहो का बात है ?

सुकुल चन्दिरमा यार—अब—का इ सच है कि तुम अमीर बनत जात हो ।

चन्द्रमा अमीर बनत जाइत हन ? बेसक, जौन चीज मन का भाय जात है ओहका लई लइत हन ।

सुकुल लेकिन यार चन्दिरमा सिंह, हम जइसन गरीब दोस्तनौ का धियान रखयो । अइसा ना होव हम लोगन का भूलि जाव ।

चन्द्रमा गरीब दोस्त ? लेकिन तुम तौ हमहूँ से जादा अमीर हो ।

[चला जाता है । सुकुल बाबू और दीनानाथ सकते में चुप खड़े रह जाते हैं ।]

सुकुल देर तक चुप्पी के बाद
देख लिहो बाबू साहब !

बाबू साहब लम्बी साँस भरते हुए
हूँ । अच्छा सुकुल महाराज अब चलित हैं ।

सुकुल जी ।

[दीनानाथ चिन्तित से आगे बढ़ जाते हैं । सुकुल भी अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर लेते हैं ।]

अन्धकार

दृश्य : 16

[चन्द्रमा अपनी कोठरी मे काफी उत्साहित बैठा है।]

चन्द्रमा स्वगत

धन ससुर। हम जइसन गरीब दोस्तनो का धियान रखयो सार गरीब दोस्त !

हँसता है

अब आई मजा। क्रान्तकारी अईहैं। बिदरोह होई। कई लोग लाहा की छड़ें, बम और बडी बडी विलायती बन्दूक लिये होइ है। अइसन बन्दूक कि बाबू साहब अउर सुकुल महराज क पासो नाही होई है। कई लोग पहिल सीधे मन्दिर मा अइहैं और पुकरि हैं–'चन्दिरमासिंह, तुमहु क्रान्तिकारी हो, आय जाओ हमरे साथ।' तब हम उनका लईके सबसे पहिल सुकुल बाबू के घर जइबे और उनक लरिका के हाक लगइबे, 'अरे ओय फिरगिनि की औउल्लाद बाहर निकर' जईसे ऊ बाहर आई– ठाय, काम खत्म। बहुत बनत है ससुर। बाबू साहेब और उनकर बछेडो नाही बचिहै। गाँव भर की बकरी नाइ मिमिआई— चन्दिरमासिंह हमका छोडि देव, हम तोहार दोस्त होई। पर हम केहू के नाही छोडब, सब साल बदजात हैं। बुधुवा सार भी हरामी है लेकिन अब तो सीध होई गवा है, ओहका छोड दर, कालू मुच्छडो का छोड देई। लेकिन ससुरे का आपन मूछ साफ करावै का पडी। फूलो का छाड देइत, मुला अब नाही छोडब बहुत फसाद मचाईस रही। सुना है बाबू साहब के बछेडा स मुह काला करति है। ससुरी जरूरी हल गिरवाये का गई हाई तभहियें नाही दिखाई देत है आजकल। सुकुल महाराज केर बहुरियो केर चाल

चलन ठीक नाही है। ऊर्द दिन ससुरी कइसन तमासा कि हिस रही—कुआ मे कूदि जाइब ! जान देई देब ! सब ढकोसला रहा। कूदी ससुरी कुआ मा ? मजा मा अधरमी के बच्चा जनत है ! ओहू का नाही छोडब।

[पुजारी उसे आवाज लगाता है।]

पुजारी भई चन्दिरमा, सोयी गयो ?

[चन्द्रमा को यह खलल अच्छा नही लगता, चिढ जाता है।]

चन्द्रमा का है रे पण्डितवा, तुमहुका सरऊ गाली मार का पडी। बिदराह होई है बिदरोह। कउनौ बखत लाल सेना आयी सक्त है।

पुजारी अल्यो ! हमसे काहे बेकार मा नाराज होत हो। सारा गाव खिलाफ होई गवा तब्बौ हमही साथ दिया तुम्हार। ला परसाद खाय लेव।

[दो मोटे-मोटे बेसन के लड्डू उसे देता है। चन्द्रमा लड्डू देखकर ढीला पड़ता है।]

चन्द्रमा अरे पण्डित काव बात है ? आज तो बहुत तर परसाद लाय हो !

पुजारी अरे भईया, पण्डिताईन मन्नत मानिन रहा। पांचे सर लड्डू चढाईन है।

चन्द्रमा पाच सेर लड्डू ? अइसन कौउन मन्नत पूरी हाय गई है पण्डिताईन केर।

पुजारी अब तुमसे का छिपाई। हमार पाव कुछु एहर-ओहर पडे लाग रहा वही से परेसान रही। आज हम गगाजली उठाय लिया कि कबहूं कउनौ गलत काम नाही करिबे। हम सुधर गयेन, सो ऊकर मन्नत पूरि भयी। वही का परसाद चढाईस है।

चन्द्रमा काव पण्डित सच कहत हो ? अब कहू मुह काला नाहि करवो।

पुजारी गगाजली उठाय हन, भइया झूठ नाही है।

[चन्द्रमा एकाएक जोर से हसने लगता है।]

चन्द्रमा धत्त तेरे सारा बिदरोह की।

पुजारी काव भया भईया ?

चन्द्रमा (और हँसते हुए)

अच्छे-अच्छे ससुर टें बोलि गय। सब अइसन गऊ बनिगेय हैं कि

पूछो नाही। सब ससुरन पै लाल सेना केर हऊआ बैइठा है। खैर, सुधर गये, सो ठीक भवा। हमहूँ नाही चाहत रहन कि कऊनो बाम्हन मारा जावै हमरे हाथो।

पुजारी तुम कहो तो तुमरी सामने गगा जली उठाय लेई।

एकाएक सहमकर

लेकिन चन्द्रिमा, सुना है लाल सेनावाले धरम का नाई मानत है। उनही के सगत स तो सुकुल महाराज केर लरिका नास्तिक होई गवा।

चन्द्रमा अरे सुकुल महाराज केर लरिका ससुर कौन क्रिान्तकारी है। क्रिान्तकारी तो पक्का धारमिक लोग होत हैं। नच्छतर बाडी की पूजा करत है। हा ऊ लोग तुम्हरे जइस बगुला भगतन के जरूर खिलाफ है ।

पुजारी हम कब कका कुछ बिगाडा है? भगवान केर नाँव लेईत है औउर बाल बच्चन का पालित हैं। कबहूँ कउनो भूल चूक होई जाय तो ऊ दूसर बात है।

चन्द्रमा अच्छा, अब हम सोइबे।

पुजारी हाँ। सुबह चाय पियें उधरै आय जाव। कोठरी मा कउनो दिया बाती केर इन्तजाम नाही किय हो। घर मा मोमबत्ती धरी है। कहो ता लाय के जराइ देई।

चन्द्रमा हाँ, जराय देव।

[पुजारी जाता है।]

वाह रे बगुला भगत, नौ सौ चूहा खाय बिल्लट्टो हज का चली। लेकिन लड्डू अच्छे बनाईन हैं, पण्डिताइन, तबियत चक होई गयी। सार कहत रहा, सुबह चाय पिय आय जाव। हाँ बेटा, चन्दिरमा का अब पूछिहैं। क्रिान्तकारीन से जान जौ निकरत है सबन केर, लेकिन हम कोहू का नाही छोडब।

लेटते हुए पुन

बाबू साहेब के लरिका के सान्ने मा पलँग बहुत नीक आवा रहा। ओका उठाय के हियां लई आइबे, बड़े चैन की नीद आयी ऊ पर। सुकुल महराज के लरिकौ बहुत बिलायती चीजें एकटठा किये है। जाकिट टोपी, अउर जान काव-काव। ऊ काली छडीऊ लेई अइबे, मार अच्छो है ससुरी की!

[पुजारी जलती मोमबत्ती लेकर आता है।]

पुजारी औय चन्दिरमा, हिया लगाय देई।

चन्द्रमा हाँ, लगाई देव।

[पुजारी मोमबत्ती एक आले मे लगा देता है]

पुजारी अउर तौ कुछु नाही चाहत हौ? पानी-वानी तौ नाही चाही?

चन्द्रमा नाही, कुछौ नाही चाही।

पुजारी अच्छा सोव तव। राम राम।

[चला जाता है]

चन्द्रमा उनींदा-सा

फूला बहुत दिन स नाही दिखायी दिहिस। पतै नाही कहाँ बिलाय गयी। लेकिन ओकर पाँव बहुत खराब है। और बिवाई कईसन फाटत है। ऊ कभौ साफै नाय करत होई। सहर मा हाकिम केर मेम के पर जितना सुन्दर रहे, गोरे चीहटे मलाई की नाई।

कसमसाते हुए

ई ससुर अउरत जात, इहौ एक लफ्डा है।

[धीरे धीरे नीद म डूब जाता है। थोडी देर मे उसके खर्राटो की आवाज आने लगती है। अचानक हो-हो कर चिल्लाता है। उठकर फटी फटी निगाहा से चारो ओर देखता है। फिर आश्वस्त होकर मोमबत्ती को फूक मार-कर बुझा देता है और सो जाता है।

अधकार

दृश्य । 17

[चन्द्रमा अपनी कोठरी मे सोया पड़ा है। काफी दिन निकल आया है। पूजन बाहर से आवाज लगाता है।]

पूजन चन्दिरमा सिंह, अरे ओय चन्दिरमा! अन्दर हो?

[चन्द्रमा हड़बड़ाकर उठकर बैठ जाता है।]

अरे अब ही तक सोवा पड़ा हो? मालूमौ है कितना दिन चढ़ि गवा!

[अर्थपूर्ण निगाहों से उसकी तरफ देखता है।]

का रात देर तक कीरान्ती होवत रहा। ई बखत सोवे का नाही है, वरना दूसरे हाथ मारि जइहैं। अउर तुम टपते रह जइओ।

चन्द्रमा क्या है? का चाही तुमका?

पूजन अरे हमका का चाही, हम तो अइसे ही तुमका देख आय रहेन। गाँव मा जऊन होत है ऊ का खबर है तुमका? सुकुल महाराज का घर मा कीरान्तकारी केर कमेटी बनत है, अउर तुम हियाँ सोवा पड़ा हो।

[चन्द्रमा एकदम चौंक जाता है।]

चन्द्रमा कइसन कमेटी? कऊन बनावत है? का लाल सेना आय गयी?

पूजन अरे नाही भाई, सुकुल महराज केर लरिका चार छ लोगन का बटोर क कल रात गिरजा जाई के खूब लूटपाट किहिन। अब ही उनके हियाँ मीटिंग चलत है। कीरान्तकारिया केर लाल जिल्ला कहू से लई आये हैं, उनका लगाई क घूमत हैं। हम

सोचा तुमका ई बात कै खबर तो होवे कै चाही। यही खातिर चला आये।

चन्द्रमा ऊ ससुर फिरंगिन की अउलाद, ऊ कब से कीरान्तकारी होई गये? ऊ कइसे कमेटी बनाअत है?

पूजन अरे भईया, उनका लाल बिल्ला मिला है। कालिज के दिना से ही उनका कीरान्तकारी से सगत रही। तुमका कुछु मालूम तो है नाहीं। बस अइसे चिल्लात फिरत हो कीरान्ती-कीरान्ती। अब तो बाबू साहिब के लरिका भी उनसे आइ मिला है। दूनौ मिल के कीरान्ती करत है। अब हमार तो साथ तुमसे है, यही खातिर तुमसे बतावै आई गय, कि बखत रहते चेत जाओ। बाकी हमका का लें दें का है?

[कोठरी मे इधर-उधर निगाह डालता है।]

अच्छा हम चलित हैं, तुम जाय क पता तो करो कउन-कउन लोग है, काव कमेटी बना है?

[चला जाता है।]

चन्द्रमा अल्यो, कमटीयो बनाय लिहिन, अउर हमका खबरौ नाहीं किहिन। पूजना खबर लावा है तो सच्चे होई। लेकिन हमका बुलावै के तो चाहत रहा। गिरजा मा लूटपाट किहिन अउर हमका पत नाही। हम ससुर सवत पड़ा रहेन। ठीकै बात है, किरान्तकारी मे सोव के नाही चाही।

[झटपट उठकर अपनी जैकेट पहनकर लाल अँगोछे को झण्डे की तरह फहराता वह बाहर निकल जाता है। सुकुल महाराज के आँगन मे चार-पाँच लोग जमा हैं। सुकुल का लडका कुर्सी पर बैठा है। पास मे स्टूल पर बाबू साहब का लडका।]

सु॰ का लडका वह तो चाहते थे कि मैं पार्टी की सेन्ट्रल कमेटी मे रहूँ, लेकिन मैं नही माना। मैंने कहा कामरेड, काम ग्रास रूट्स से शुरू होना चाहिए। हम लोगो को गाँव मे पहल करनी होगी, फील्ड में काम करना होगा। कुर्सी पर बैठकर थ्योरिटिकल लिखा-पढ़त और बातचीत से कुछ बनने बिगडनेवाला नही है। इसी बात पर डिफरेंसेस हुए, और मैं शहर छोडकर यहाँ आ गया।

अब उन लोगो की बात समझ मे आई है, अब कही जाकर डायरेक्ट एक्शन की शुरुआत हुई है। हम लागो पर बडी जिम्मेदारी है, हमे फूक फूंककर कदम उठाना है। क्लास एनेमिज को एलीमीनेट करना है और और यह भी ध्यान रखना है कि अपन लागो से एलीयनेट न हो जाय।

[तभी पजे के बल चलता हुआ चन्द्रमा भीतर दाखिल होता है और सबस पीछे आकर खडा हो जाता है।]

कल का हमारा आपरेशन काफी हद तक सफल रहा। लेकिन अभी भी क्वारडीनेशन की कमी है। हमे अपने को एजूकेट करना है, और प्रैक्टीकल ट्रेनिंग भी हासिल करनी है। हमारी एक्टीवीटीज का पता किसी को नही चलना चाहिए। वी मस्ट मेन्टेन एप्सलयूट सीक्रेसी।

चन्द्रमा अ र र न

[सभी मुडकर उसे घूरने लगत हैं। सुकुल के लडके की निगाह भी उस पर पडती है।]

सु का लडका क्या है?

चन्द्रमा हम।

लडका निकल जाओ यहाँ से।

चन्द्रमा हमहूँ सामिल होवे के चाहित है।

सु का लडका निकल जाओ यहाँ से।

[अपनी छडी उठा लेता है।]

बाबू का लडका चिल्लाकर

सुकुल बाबू तुमका बाहर निकलन को कह रहे हैं, तुमने सुना नही।

[चन्द्रमा दोनो हाथ उठाकर अपन सिर पर रख लेता है और बिना ये जान कि वो क्या कर रहा है, दौडकर फाटक स बाहर निकल जाता है। लेकिन कोई उसके पीछे नही जाता। थोडी देर भागत रहने के बाद धीरे-धीरे चलन लगता है। वह बेहद परेशान और हतोत्साहित है। ठेके पर आकर वह ताडी की एक बोतल उधार लेता है और अकेला चुपचाप एक तरफ बैठकर पीने लगता

है। थोड़ी शराब भीतर जाने के बाद वह ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगता है।]

चंद्रमा तो ई विदरोह हमरे लिए नाही, सिरफ तुम लोगन केर खातिर है। सत्यानास होय फिरंगियन की कम्माट अच्छा तो तू बना रहो विदरोही। जानत हो विदरोह के कीमत फांसी पै लटक के चुकावे के पड़त है। हम मुखबिर बन जाईब। तुमका फांसी पै चढ़ावे के खातिर। तोहरे पूरे खानदान को फांसी लटकवाई देब। तू समझेव का हो, हरामी!
एक बोतल जरूर देब हमका!

अंधकार

दृश्य : 18

[शाम का धुंधलका। चन्द्रमा नशे में धुत लड़खड़ाता मन्दिर की ओर चला जा रहा है। तभी कहीं से गोलियाँ चलने की आवाज आती है। चन्द्रमा रुककर सुनने लगता है। तभी अंधेरे में से एक आदमी तेजी से भागता हुआ उधर से गुजरता है। यह बुधवा है।]

चन्द्रमा अरे कौन है रे! रुक तो। अबे रुक ससुर!

बुधवा : रुक जाता है

का है, सोर न करो।

चन्द्रमा अबे ऽ बुधवा! का बात है बे?

बुधवा बाबू साहेब वो बाबू साहेब को मार दिये हैं!

चन्द्रमा मार दिये हैं? कउन?

बुधवा लाल सेनावाले। वे मुकुल महराज के लरिका को भी पकरि लिये हैं। तुम भी इहाँ न ठहिरो।

[बुधवा भाग जाता है। चन्द्रमा एक क्षण ऐसे ही रुका रहता है, फिर एकाएक चिल्ला पड़ता है।]

चन्द्रमा इनकिलाब जिन्दाबाद!

[सन्नाटे मे उसकी लडखडाती—फटी आवाज अजीब लगती है। बुधवा जिधर से भागता आया था वह उसी दिशा मे तेजी से बढ़ता है, लेकिन दो चार कदम चलकर ही लडखडाकर गिर पडता है।]

अधकार

दृश्य : 19

[दूसरे दिन की सुबह। बाबू साहेब और मुकुल महाराज के घरों से घुटी घुटी रोने की आवाजें आ रही हैं। गाँव के लोग चौराहे पर जमा हैं—सभी सहमे हुए। चौराहे पर लाल स्याही से लिखा नक्सल पोस्टर है। कुल मिलाकर माहौल असमंजस और दहशत का है। तभी चन्द्रमा वहाँ पहुँचता है। वह बहुत खुश है। लोगों में खुसफुसाहट शुरू हो जाती है। चन्द्रमा गर्व से लोगों को देखता है। लोग भयभीत। चन्द्रमा टहलता हुआ पोस्टर के सामने जाकर खड़ा हो जाता है। एक असमंजस का भाव उसके चेहरे पर उभरता है, लेकिन शीघ्र ही वह शान से घूमकर नारा लगाता है—]

चन्द्रमा इनकिलाब—जिन्दाबाद !

[लोग तेजी से इधर उधर होने लगते हैं। चन्द्रमा हँसता है।]

अन्धकार

दृश्य 20

[आधी रात का समय। एक सैनिक दस्ता, एक मिलेशिया दस्ता और एक पुलिस दस्ता और गुप्तचर विभाग के पाँच आदमी पूजन को साथ लिये मंदिर को चारों ओर से घेर लेते हैं। मंदिर के फाटक के सामने उन्होंने मशीन गन फिट कर रखी है और सब निशाना साधे हैं। काफी समय तक मन्दिर में तिनका भी नहीं हिलता। कप्तान मेगाफोन पर ऐलान करता है—]

कप्तान चन्द्रमा उर्फ चमकू वल्द
चौंककर पूजन से
चौकीदार ! बाप का क्या नाम है उसके ?

पूजन ऊ तो नेहु वे नाही मालूम सरकार !

कप्तान मेगाफोन पर
वल्द नामालूम ! तुम चारों तरफ से घेर लिये गये हो ! तुम पर सरकार के खिलाफ साजिश और लोगों में हिंसा भड़काने का आरोप है। हम तुम्हें चेतावनी देते हैं कि तुम अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये चुपचाप बाहर निकल आओ।

[चन्द्रमा बाहर नहीं आता। कप्तान बेचैन हो जाता है।]

चन्द्रमासिंह उर्फ चमकू हम तुम्हें फिर चेतावनी देते हैं। तुम अपने को हमारे हवाले कर दो। अदालत तुम्हें न्याय देगी। चन्द्रमासिंह उर्फ चमकू बाहर आ जाओ !

[तब भी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। कप्तान और भी परेशान हो उठता है।]

ये हमारी तुम्हें आखिरी चेतावनी है, वरना हमारे जवान तुम्हें गोलियों से भून देंगे। भागने की या मुकाबिला करने की कोशिश बेकार है। तुम चारों तरफ से घिरे हो। बाहर आ जाओ। चन्द्रमासिंह उर्फ चमकू, बाहर आ जाओ!

[चन्द्रमा बेहद सहमा हुआ, दोनों हाथ माथे पर रखे बाहर निकलता है। अपने को चारों ओर से घिरा पाकर वह डरकर भागता है।]

फायर, किल हिम!

[दनादन गोलियाँ चलनी शुरू हो जाती हैं, ऐसी कि भले लोगों के कान के पर्दे फट जायें। एक घुटी सी चीख सुनायी देती है और चन्द्रमा वहीं ढेर हो जाता है। धुआँ उठ रहा है। कुछ दिखायी नहीं देता।]

अन्धकार

दृश्य 21

[मन्दिर के बाहर सारा गाँव जमा है। सुकुल महाराज और बाबू साहब का लडका आदि सभी हैं। गोलियो से छलनी चन्द्रमा की लाश एक ओर पडी है। सुकुल महाराज और बाबू साहब का लडका कप्तान की फाइल पर दस्तखत करते हैं। आपस मे कुछ खुसर फुसर करते हैं, जो कि सुनायी नही देती। तभी पूजन कही से तेजी से चलकर आता है और कमीज के नीचे से एक देसी कट्टा निकालकर कप्तान को देता है। कप्तान सिर हिलाता है और कट्टा उससे लेकर सूघता है। एक सिपाही को बुलाकर कट्टा उसे दे देता है। सिपाही कट्टा ले जाकर चन्द्रमा के हाथ मे रख देता है। दो सिपाही लाश को खीचते हुए वहाँ से ले जाते हैं। पीछे-पीछे कप्तान और बाकी लोग जाते हैं। नपथ्य से एक जीप स्टार्ट होती है और तेजी से घूमकर चली जाती है। बहुत सारी धूल उडकर गाँव के लोगो पर पडती है, जो मन्दिर के सामने जमा थे।]

अन्धकार

०००